ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

सतयुग की वापसी

वर्ष 23, अंक-1

सुखी जीवन विशेषांक

जनवरी-2007

सूक्ष्म-संरक्षण

1. जगदगुरू आनन्दकंद भगवान श्री कृष्ण
2. कुल देवी राजराजेश्वरी महालक्ष्मीजी
3. संकट मोचन कृपानिधान श्री हनुमानजी महाराज।
4. आदि पूर्वज श्री श्री 1008 महाराजा श्री अग्रसेन जी
5. परम वंदनीया एवं स्नेहसलिला महारानी माँ माधवी देवी
6. परम पूज्य ब्रह्मलीन पिता श्री रामजीलाल जी अग्रवाल
7. परम स्नेहसलिला ब्रह्मलीन माता श्रीमती भगवती देवी

प्रधान सम्पादक

डॉ० मुरारी लाल अग्रवाल

एडवोकेट, कौस्ट एकाउन्टेंट

सम्पादक- 'आरोग्य अमृत' एवं 'अमृत धारा'
प्रमुख- अखिल विश्व गायत्री परिवार
प्रमुख-प्रबंध ट्रस्टी- गायत्री परिवार ट्रस्ट, गायत्री शक्तिपीठ, अलवर
सह-संरक्षक - श्री मेंहदीपुर बालाजी मानव कल्याण मण्डल, इलाहाबाद
संस्थापक एवं प्रमुख- महाराजा श्री अग्रसेन विचार मंच तथा महाराजा श्री अग्रसेन समाजवादी पार्टी
सेवानिवृत्त- वरिष्ठ मण्डल लेखाधिकारी (भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग)
आजीवन सदस्य- दिव्य जीवन संघ, अन्तर्राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संगठन (I.N.O.), केंद्रीय सरकार के सेवानिवृत्त कर्मचारियों की एसोसियेशन (C.G.P.A.), राजस्थान जन सतर्कता समिति एवं अन्य संगठन।

प्रधान-कार्यालय

34, मधुवन, अलवर (राज.) 301 001
दूरभाष 0144- 2332679

प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक : मुरारीलाल अग्रवाल के लिए क्राउन प्रिंटिंग प्रेस के लिए सूर्य प्रिन्टर्स, 38, लखंडा वाला, पुराने बिजलीघर के पीछे, अलवर 301 001, मोब. नं. : 9414016431, लेजर टाईप सैटिंग : गिरीश दीक्षित, आर टैक कम्प्यूटर्स, अलवर

कहाँ क्या पढ़ें ?

आपके एवं आपके परिवार के सदस्यों को स्वस्थ-दीर्घजीवन, सुख-शांति, समृद्धि, सब कार्यों में सफलता, यश-कीर्ति एवं सुखद उज्ज्वल भविष्य प्रदान करने वाली सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका

वर्ष - 23
अंक - 1

सुखी जीवन विशेषांक

जनवरी-2007

सदस्यता सहयोग राशि
एक वर्ष - 100 रुपये
तीन वर्ष - 250 रुपये
पाँच वर्ष - 400 रुपये
दस वर्ष - 700 रुपये
आजीवन - 1100 रुपये, संरक्षक - 3100 रुपये
मुख्य संरक्षक - 5100 रु., विदेश में एक वर्ष - 600 रुपये

ईश-प्रार्थना

समर्पण

दास प्रभु मैं आपका आया तेरे द्वार।
करूँ समर्पण स्वयं को, आया सब कुछ हार॥
भेंट करूँ क्या आपको, कुछ न मेरे पास।
भक्ति भेंट प्रभु लीजिए, करे अर्ज यह दास॥
अवगुण और विकार से, भरा मेरा यह शीश।
करूँ मैं कैसे वन्दना, हे गिरधर जगदीश॥
आया तेरे द्वार पर, करता यही पुकार।
कुछ न माँगू आपसे, माँगू केवल प्यार॥
गले लगाकर अपने, दो चरणों में स्थान।
रहे तुम्हारा ही सदा, मेरे मन में ध्यान॥
मेरे मन से आपकी, कभी न भूले याद।
करूँ यही मैं वन्दना, दो भक्ति प्रसाद॥
भक्ति ज्योति ही सदा, जलती रहे अपार।
तेरा ही मन में रहे, नाम सदा करतार॥

अपनों से अपनी बात

सतयुग कब आयेगा?

"सतयुग अब आयेगा कब ? जन-जन जब चाहेगा तब।"

सतयुग अर्थात् सत्य का युग कब आयेगा, इसका एक ही उत्तर दिया जा सकता है और वह है-"जब अधिकांश व्यक्ति कलियुग से परेशान होकर कलियुगी चिंतन छोड़कर सतयुग का चिंतन करने लगें।" चिंतन से ही चरित्र बनता है। जो व्यक्ति जैसा सोचता है, वह वैसा ही आचरण करता है और वैसा ही बन जाता है।

"सतयुग की वापसी" पत्रिका का उद्देश्य है कुविचारों का उन्मूलन और श्रेष्ठ विचार देना, लोगों के सोचने के तरीके को बदलना, विचार प्रदूषण मिटाना, मानव में देवत्व जगाना एवं धरती को स्वर्ग बनाना। पिछले 22 साल से हम यह प्रयास कर रहे हैं, परन्तु अभी तक अपने प्रयास में सफल नहीं हो पाये हैं। हमने "कलियुग मुक्ति सहस्रनाम" की स्थापना की और पत्रिका के पाठकों से आशा व अपेक्षा की कि वे इसमें सक्रिय सहयोग देंगे और घर-घर सद्विचार फैलाने में सहयोग देंगे, परंतु लोगों ने अपने परिचय तो छपवा लिए, लेकिन सद्विचार फैलाने के लिए एक भी सदस्य नहीं बनाया। इसका एक ही अर्थ निकलता है कि अभी लोग कलियुग में ही रहना चाहते हैं।

कलियुग का अर्थ है-पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर हावी होना। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मानवतावादी भारतीय संस्कृति के स्थान पर उस संस्कृति का विस्तार जो मानव को मानवता के स्तर से नीचे गिराकर नर पशु बना देती है। भारत में शराब, मांसाहार, व्यभिचार, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, हिंसा, ढोंग, पाखण्ड, अंधविश्वास, चोरी, डकैती आदि दुष्प्रवृत्तियाँ बढ़ती जा रही हैं और स्नेह, सौजन्य, सहानुभूति, सम्वेदना, आत्मीयता, करुणा, उदारता, परोपकार, परमार्थ, सेवा, सहयोग जैसी सत्प्रवृत्तियाँ मिटती जा रही हैं।

भारत की मानवतावादी संस्कृति के विलुप्त होते जाने का एक प्रमुख कारण यह भी है कि सृजन और निर्माण की जिम्मेदारी जिन माताओं और बहिनों के ऊपर थी, उन पर पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति बहुत तेजी के साथ हावी होती जा रही है। इसका कारण है-दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले बेतुके सीरियल। नान्देड़ (महाराष्ट्र) से राजस्थानी भाषा में प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका-"म्हारो देस दिसावर" के दिसम्बर-06 में एक बहिन सौ० सोनी पारीक के एक लेख-"बेतुकी सीरीयलां के पागलपन (बेतुके सीरियलों का पागलपन)" के कुछ अंश हिंदी रूपान्तरित करके हम यहाँ साभार जनहित में दे रहे हैं :-

"अब लो सीरियलों की बात। एक भी सीरियल ऐसा नहीं है, जिसमें एक आदमी की एक ही औरत हो और एक औरत का एक ही पति हो। सीरियल चाहे वह "स्टार प्लस" का हो या "सहारा वन" का हो या "जी.टी.वी." का हो, हर सीरियल में किसी की दो औरते हैं, तो किसी के तीन पति हैं। एक मर गया, तो चार-छः माह में दूसरा। फिर पहला मरा हुआ वापिस जिंदा होकर आ गया। कोई "कुमकुम" देवर के साथ विवाह करती है, तो कोई "प्रेरणा" विवाह से पहले ही बच्चा पैदा करती है, तो कोई "मोहिनी" जैसी बहू अपनी ससुराल वालों को बर्बाद करती है, तो कोई "तुलसी" जैसी अपने पेट के बेटे का खून करती है, तो "महलों की रानी" अपने पति के हत्यारे से शादी करती है, तो "श्यामली" के पेट में छोटे भाई का बच्चा है और शादी बड़े भाई के साथ करती है। किसी की पत्नी कोमा में चली गई तो उसकी सहेली से विवाह कर लिया। पत्नी ठीक हो गई तो दोनों को रख लिया। जतीन मर कर गया तो "कुमकुम" ने "सुभीत" से विवाह कर लिया। साल भर बाद "जतीन" वापस आ गया तो उसने (कुमकुम) ने अपनी सास से पूछा कि मैं किसके बैडरूम में जाऊँ। अब बोलो,

शेष पृष्ठ 12 पर

सिद्धाश्रम एवं श्री हनुमत् लीला विलास

✍ सीताराम मक्खनलाल पोद्दार

गतांक से आगे :-

"भगवन्! वैभव के लिए धन-स्वर्ण आवश्यक है। आप हम दोनों का शरीर शुद्ध स्वर्ण का बना दीजिए। फिर यह वरदान देने की कृपा कीजिए कि खाने के बाद हम जो मल त्याग करें, वह सब स्वर्ण बन जाये।"

कुछ हँसते हुए महर्षि बोले-"वैभव तथा आनंद का मूल कारण तुम स्वर्ण समझते हो, यह तुम्हारी बहुत बड़ी भूल है, किंतु मैंने तुम्हें मनचाहा वरदान देने का वचन दिया है। अत: मैंने यह वरदान तुम्हें दिया।"

वशिष्ठ जी के ऐसा कहते ही दोनों राक्षसों के शरीर स्वर्ण के हो गये। दोनों एक-दूसरे की चमचमाती देह देखकर अति प्रसन्न हुए। तब दुर्बंड ने एक प्रश्न किया-"परम कृपालु गुरुदेव! हम मायावी तथा कामरूप कहे जाते हैं, तो इच्छा तथा आवश्यकतावश हम जो भी रूप धारण करेंगे, वह भी सोने का होगा न?"

महर्षि ने कहा-"अवश्य! भविष्य में तुम लोग जो भी रूप धारण करोगे, वह भी स्वर्ण का ही होगा।"

यह सुनकर दोनों हर्षातिरेक के कारण गद्‌गद् हो गये। फिर गुरुदेव से आज्ञा लेकर तथा उनके चरणों में साष्टांग प्रणाम करके वहाँ से चल पड़े।

श्री हनुमानजी उन राक्षसों का प्रसंग आगे बढ़ाते हुए नारदजी से बोले-"वे दोनों खूब अधिक मात्रा में खाकर तथा अधिक मात्रा में मल त्यागकर खूब अधिक स्वर्ण प्राप्त करने लगे। एकत्रित किया हुआ स्वर्ण दोनों पर्वत की गुफा में रख आते थे। कुछ ही दिनों में उनके पास मर्याप्त स्वर्ण भण्डार हो गया। तब एक दिन दोनों बैठकर विचार करने लगे। दुर्बंड ने अतिबंड से कहा कि हमारे पास बहुत अधिक स्वर्ण हो गया है। इसका कुछ उपयोग होना चाहिए। हम कब तक एकत्र करते रहेंगे?"

अतिबंड बोला-"अरे मूर्ख! इतने स्वर्ण को तू बहुत अधिक कहता है? अभी तो कुछ भी नहीं हुआ। हमें इसका हजार-लाख गुना स्वर्ण चाहिए।"

"किन्तु किसलिए?"

"लगता है थोड़ी साधना करने से तू पिछली सब बातें भूल गया। अरे मूर्ख! हमें एक विशाल भवन बनवाना है, जिसकी दीवारें, छत, धरातल और खम्भे सब स्वर्ण के होंगे। वैभव के सारे सामान, सिंहासन आदि भी स्वर्ण के होंगे। भवन के चारों ओर स्वर्ण का परकोटा होगा। स्वर्ण के बल पर हम बहुत से दास-दासियाँ रखेंगे। हमारे पास सैनिक, सेनापति और सचिव होंगे, राजसभा और सभासद होंगे।"

"फिर?"

"फिर क्या, एक दिन हम दोनों लंका जाकर महाराजा रावण से विनय करेंगे कि स्वामी अपने चरणों से हम सेवकों का निवास-स्थान पवित्र कीजिए।"

"मगर हम लंका कैसे जा सकते हैं? हमें देश-त्याग का दंड मिला है। हमें

देखते ही महाराज हमारी गर्दन कटवा देंगे।''

''ऐसा नहीं होगा। समय बहुत बीत गया है। महाराज का क्रोध अब शांत हो गया होगा। वे हम सेवकों की प्रार्थना स्वीकार कर लेंगे। फिर जब वे हमारे यहाँ आयेंगे और हमारा स्वर्ण-महल तथा वैभव-ऐश्वर्य देखेंगे, तब मन में पश्चाताप करेंगे कि ऐसे होनहार सेवकों को मैंने व्यर्थ ही लंका से निकाला। बस, तभी हमें अपनी साधना को सफल मानना चाहिए।''

''तू तो बड़ा बुद्धिमान है अतिबंड। बहुत दूर की सोची तूने। इस दृष्टि से अभी जो स्वर्ण है हमारे पास, उससे तो एक कक्ष भी नहीं बनेगा।''

''तभी तो कहता हूँ इतने स्वर्ण को बहुत मत समझ। दूसरी बात यह है कि केवल मल-निर्मित स्वर्ण से काम नहीं चलेगा। इस विधि से समय बहुत लगेगा। अतः पर्याप्त स्वर्ण एकत्र करने के लिए हमें अन्य मार्ग का आश्रय भी लेना पड़ेगा।''

''तू ठीक कहता है। अधिक से अधिक सोना जिस तरह मिले, हमें वही उपाय करना चाहिए।''

श्री हनुमानजी कह रहे हैं-''स्वर्ण-लोभ ने दोनों को अधर्म, अन्याय तथा अनुचित कर्म करने के लिए बाध्य कर दिया। वे रात के समय माया द्वारा स्वर्णाभूषण बेचने वालों की दुकान में प्रवेश करके सारे स्वर्णाभूषण तथा स्वर्ण चुरा लेते थे। सामाजिक एवं धार्मिक समारोहों में, जहाँ स्वर्णाभूषणों से सुसज्जित बहुत-सी महिलाएँ रहती थीं, वे घोर ध्वनि के साथ अंधकार पैदा कर देते थे। फिर सब महिलाओं के आभूषण बलपूर्वक उतारकर वे भाग जाते थे। धनाढ्य व्यक्तियों की पूरी बारात तथा यात्रियों को मार्ग में ही लूट लेते थे। वे कभी सिंह, कभी हाथी बन जाते थे। उन पर किसी का वश नहीं चलता था।''

एक दिन दोनों ने नदी किनारे एक गाय खड़ी देखी, जिसका पूरा शरीर स्वर्णाभूषणों से सजा हुआ था। वहाँ किसी व्यक्ति को न देखकर वे आभूषण उतारने लगे। गाय रँभाई। उसका स्वामी एक तपस्वी-विद्वान ब्राह्मण था, जिसे राजा ने स्वर्णाभूषणों से अलंकृत करके वह गाय दान में दी थी। वह ब्राह्मण नदी में स्नान करके सूर्य देवता को जल अर्पण कर रहा था, इसलिए गाय के रँभाने पर उसने ध्यान नहीं दिया। किंतु अपनी क्रिया समाप्त करके जब उसने तट की ओर मुख किया तो देखा कि दो राक्षस गाय के आभूषण उतारकर दुपट्टे में बाँध रहे थे। उसे बड़ा क्रोध आया। वह पात्र में जल लेकर यह कहते हुए दौड़ा कि ठहरो दुष्टों, मैं तुम्हें पाप का समुचित दण्ड दूँगा। ब्राह्मण को अपनी ओर आते देखकर दोनों आभूषण सहित भागे। वे मन ही मन डर गये, क्योंकि ब्राह्मणों की मंत्र-शक्ति से परिचित हो चुके थे। दुर्बंड बोला कि हम दो पैरों से अधिक तेज नहीं भाग सकेंगे, अतः हमें महिष बन जाना चाहिए। जब दोनों महिष बन गये और चौकड़ी भरते हुए तीव्र गति से भागे। ब्राह्मण तेजस्वी तथा आत्मबल से सम्पन्न था। वह भी जल पात्र लेते हुए तीव्र गति से उनके पीछे भागा। अतिबंड ने कहा कि इस ब्राह्मण से गुरुदेव ही हमें बचा सकते हैं, हमें उन्हीं की शरण में जाना चाहिए। ऐसा सोचकर दोनों महर्षि के आश्रम की ओर दौड़े। घबराहट के कारण वे अपने मूल रूप में आना भूल गये और महिष ही बने रहे। आश्रम के कुछ दूर से ही दोनों चिल्लाने लगे कि गुरुदेव! हमारी रक्षा कीजिए, हमारे प्राण बचाइए। -क्रमशः

सद्गुण हैं सच्ची सम्पत्ति, दुर्गुण सबसे बड़ी विपत्ति।

देवपूजन, अमृत वर्षा, घरेलू अमूल्य बातें, खान-पान एवम् घरेलू इलाज

[उपरोक्त शीर्षक वाली पुस्तक श्रद्धेय भाई श्री सत्यनारायण सिंहल, 24/4, पंजाबी बाग एक्सटैंशन (पश्चिम), नई देहली-26 द्वारा संकलित है। इस पुस्तक में जो कुछ लिखा है, उसका नियमित स्वाध्याय करने वालों के गुण, कर्म एवं स्वभाव सर्वश्रेष्ठ बन जाते हैं और उनका जीवन सफल, श्रेष्ठ और सार्थक बन जाता है। -सम्पादक]

गतांक से आगे :-

(22) महामंत्र :- हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ मंत्र का जप प्रारम्भ करें। तत्पश्चात् दूसरे दाने पर बढ़ें। इस प्रकार हर मनके पर पूरा महामंत्र जपते हुए अगले मनके पर बढ़ते जायँ। 108 बार जप करने के बाद आप पुन: मुख्य दाने (सुमेरु) तक पहुँच जायेंगे और तब आपकी एक माला पूरी हो जायेगी। अब बिना सुमेरु को पार किए माला को घुमाइए तथा माला को सुमेरु (सबसे बड़ा दाना) को दोनों आँखों से और मस्तक से छूकर घुमाकर दूसरी माला शुरू करें-इसी तरह तीसरी माला, चौथी माला, जितनी ज्यादा से ज्यादा कर सकें, करें। यद्यपि जप करने के लिए कोई विशेष नियमों की आवश्यकता नहीं है, परंतु फिर भी यदि सम्भव हो सके तो प्रतिदिन 16 माला का जप करने का प्रयत्न करना चाहिए तथा भौतिक जीवन के चार व्यसनों का त्याग करना चाहिए-1. प्याज, लहसुन, अण्डा, माँस-मछली का त्याग करना चाहिए। 2. चाय, कॉफी, पान, बीड़ी-सिगरेट, शराब, गांजा, भांग, अफीम, सुपाड़ी, तम्बाकूं आदि का नशा। 3. परस्त्री तथा परपुरुष गमन। 4. जुआं तथा लॉटरी इत्यादि। जप करने का सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन "भगवद्गीता यथारूप" के कुछ भाग का अध्ययन करना चाहिए। माला खुली न रखें, माला पर दूसरे की दृष्टि न पड़े, अत: माला को सुंदर-सी गौमुखी में डालकर जप करें। एक सदस्य की माला पर दूसरा सदस्य जप न करे। प्रत्येक सदस्य की माला अलग-अलग रखनी चाहिए। हमारे ऋषि-मुनियों ने माला की मणियों का संख्या नक्षत्र माला पर आधारित किया है। मुख्य नक्षत्र 27 होते हैं और प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं, अत: 27x4=108 मनको की माला होनी चाहिए (सुमेरु को छोड़कर 6)। "कर-माला" हाथ की अंगुलियों पर एक निश्चित क्रम अनुसार जप की गणना करने से दस-गुणा अधिक फल की प्राप्ति होती है। अंगुलियाँ सटी हुई और हथेली की तरफ थोड़ी-सी मुड़ी हुई रखनी चाहिए।

(23) "दीप-ज्योति" अखण्ड ज्योति से क्या फायदा? :- (1) घी का दीपक वैभव, धन, लक्ष्मी, सुख-शांति बढ़ाता है, घर के सदस्यों को आरोग्य रखता है, शुभ करता है, कल्याण करता है और शत्रुओं का नाश करता है। अखण्ड दीप-ज्योति 24 घण्टे और सालों-साल रखने से उपरोक्त बातें पूर्णता से प्राप्त रहेंगी। दीप जलाकर दीपक को दीवट या अक्षत आदि पर रखना चाहिए। सीधे जमीन पर रखना मना है। (2) सायंकालिक भोजन पर दिन भरके अपने कृत्यों का दीपक के आगे

शेष पृष्ठ 10 पर

हा हा श्री चार सौ बीस
(2 हा श्री 420)

(धारावाहिक प्रकाशन)

लेखक-श्री रामस्वरूप ब्रजपुरिया

गतांक से आगे :-

बहू कह रही सास से, अंखियन अंजन आंज।
रोटी तब दैहों, प्रथम झूठी थरिया मांज ॥122

जब जाना इस गर्भ में, बेटी का है भ्रूण।
सास ससुर पति मिल, सभी करवा देते खून ॥123

पहले बेटा ना जने, भूले जो हो जाय।
क्वारा ही उसको रखो, करे न उसका ब्याह ॥124

हुये पराये मीत है, मीत हो गये गैर।
गोद खिलाये वे करें, माता-पिता से बैर ॥125

वृद्ध हुये, तन हो गया, सब रोगों का धाम।
औषधि गंगा जल समझ, वैद्य समझ हरिनाम ॥126

आव गई आदर गया, नैनन गया सनेहु।
जब हमने उनसे कहा, भैया चन्दा देहु ॥127

जूता फैंकू मंच पर, तो कैसा अपमान।
पद में ही तो है सदा, जूतों का स्थान ॥128

चार वेद छः शास्त्र में, बात मिली हैं दोय।
मौका पड़े दबोच ले, जगह-जगह मत रोय ॥129

बीच सड़क पर डालते, गऊ को चारा लोग।
टूटे हड्डी वृद्ध की, रहे न चलने योग ॥130

बीड़ी पीते आप कब? हमें लगाते भोग।
लेत सांस भीतर घुसे, धुंवा लगावे रोग ॥131

मूखे कछुक सवर्ण है, लखपति कछुक चमार।
दलित न कोई जात है, सब में सबहि निहार ॥132

लाखों साधू संत हैं, नेता कई करोड़।
झाडू चाहत कोई नहिं, सबको चहिये लोढ़ ॥133

दिखे महंत न एक जेहि, निर्धनता का रोग।
नाम भले उनके न कछु, भोग रहे सब भोग ॥134

समझदार दुश्मन भला, मूर्ख मित्र बेकार।
पैसा शुभ ईमान का, ठग के व्यर्थ हजार ॥135

सात जात के हाथ का, जूठन खांय उठाय।
डफर होंय ते जाय कर, बफे भोज में खांय ॥136

कविरा कवियन बिच खड़ा, किसकी मांगे खैर।
सबको सबसे है जलन, सबको सबसे बैर ॥137 -क्रमशः

-श्री टॉकीज के पास, सदर बाजार, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.) 474006

चिरैंयाँ खेत चुनि गई

✍ बलराम सिंह परिहार

नींद भरि सोवत रह्यो किसान
चिरैंयाँ खेत चुनि गईं।
काल की गति भूला नादान
मौत आ कफन बुनि गईं॥
मरा पड़ौसी उस दिन जाते
सभी लोग श्मशान,
किरिया करम चलै तब,
तो रहता थोड़ा ध्यान,
तेरही खातेइ बिसरी देहियाँ
अपनिऊ धुनि गईं।
नींद भरि सोवत रह्यो किसान
चिरैंयाँ खेत चुनि गईं ॥1॥
पैसे के आगे सब भूला,
नीति, धरम, ईमान,
पुति गई कालिख मुँह में,
यों इन्सान बना हैवान,
तृष्णा प्यासी रही चिता में,
काया भुनि गई।
नींद भरि सोवत रह्यो किसान
चिरैंयाँ खेत चुनि गईं ॥2॥
सोवत सोवत कटी जिंदगी,
जागत देखे सपने,
जिनके लिए जोरि धन राख्यो,
हुये न वे तक अपने,
भूले भजन बुढ़उनूँ अँखियाँ,
कीचड़ सनि गईं।
नींद भरि सोवत रह्यो किसान
चिरैंयाँ खेत चुनि गईं ॥3॥
एक-एक कर घर में जनमीं
कई-कई संतान,
याद रही बस उनकी सेवा,
लकड़ी नून पिसान,
छोड़ि चला धन पीछे तन की
खेति लुनि गई।
नींद भरि सोवत रह्यो किसान
चिरैंयाँ खेत चुनि गईं ॥4॥
लियो अनेकों जन्म बावरे,
फिर भी ध्यान न आया,

शेष पृष्ठ 12 पर

रूप-निखार

(डॉ. गणेश नारायण चौहान, 7-ड-19, जवाहर नगर, जयपुर-302 004 द्वारा लिखित एवं पापुलर बुक डिपो, जी-15, एस.एस. टावर्स, धामाणी गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302 003 द्वारा प्रकाशित पुस्तक का धारावाहिक प्रकाशन)

गतांक से आगे :-

मुँहासे (Acnes, Pimples)

अधिकतर युवा अवस्था में चेहरे पर छोटी-छोटी फुंसियाँ निकलती हैं। इससे चेहरा बदसूरत हो जाता है। इन्हें मुँहासे, कीलें कहते हैं।

मुँहासों के कारण ? :- मुँहासे त्वचा की सूजन की वह स्थिति है जहाँ त्वचा को नम रखने वाली ग्रंथि (सिबेशस ग्लैंड) जरूरत से ज्यादा तेल का निर्माण करती है। इस प्रक्रिया के दौरान त्वचा की निर्जीव कोशिकाएँ व जीवाणु (बैक्टीरिया) हेयर फौलीकल (बालों की जड़ों) के अंदर फंस जाते हैं व रोम-छिद्रों को बंद कर देते हैं। परिणामस्वरूप फौलीकल सूजने लगता है, इसके साथ-साथ त्वचा का साधारण तैलीय उत्पादन भी चलता रहता है, जिसके कारण फौलीकल पस से भर जाता है और त्वचा के ऊपर मुँहासे के रूप में उत्पन्न होता है। हॉरमोन (शरीर के भीतर का एक पुष्टिकर रासायनिक तत्व) की निरंतर अस्थिरता से मुँहासों की दशा और ज्यादा बिगड़ जाती है। इस सारी प्रक्रिया में 2 से 3 हफ्ते लग जाते हैं।

मुँहासे हॉरमोन की गड़बड़ी, पेट की खराबी, चर्म की सफाई में कमी से होते हैं। मुँहासे तैलीय त्वचा पर निकलते हैं। अतः चेहरे पर चिकनाईयुक्त क्रीम, तेल नहीं लगाना चाहिए। भावनात्मक तनाव से चिकनाई पैदा करने वाली ग्रंथियाँ अधिक सक्रिय होकर चिकनाई छोड़ती हैं, जिनसे मुँहासे होते हैं।

मुँहासों को हाथ से फोड़ने से निशान बन जाते हैं। चिकित्सा काल में पेट साफ रहे, कब्ज न हो तो शीघ्र लाभ होता है।

मुँहासों का सम्बन्ध खाने-पीने की गलत आदतों से भी है, जैसे-अनियमित भोजन, अपर्याप्त भोजन, स्टार्चयुक्त भोजन या फिर चीनी या तैलीय खाद्य पदार्थों की अधिकता। अगर पेट अपना काम सुचारु रूप से नहीं करता है तो बेकार चीजें, जो जितनी जल्दी बाहर आ जानी चाहिएँ, उतनी जल्दी बाहर नहीं आतीं और रक्त में ज़हरीले पदार्थ फैल जाते हैं। अतिरिक्त प्रयास के रूप में त्वचा का एक प्रयास यह भी रहता है कि वह बेकार पदार्थों को शरीर के बाहर निकाले और जब यह क्रिया अवरुद्ध हो जाती है, तो ऐसी स्थिति का परिणाम है-मुँहासे।

मुँहासों के अन्य कारण हैं-अधिक मात्रा में चाय, कॉफी, अण्डा, मिर्च-मसाले, भय, कब्ज, शराब, तम्बाकू, मानसिक-तनाव, मासिक-धर्म की खराबी तथा अनियमितता।

मुँहासे दूर करने के लिए प्रारम्भ में एक सप्ताह फलों का सेवन करना चाहिए। इस दौरान दिन में तीन बार फलाहार करना चाहिए। भोजन के रूप में सेब व अंगूर, अनन्नास, अनार इत्यादि मौसम के फल खाने चाहिए। केला, सायट्रिक अम्ल वाले फल, टिनबंद फल इत्यादि का सेवन वर्जित है। पानी में नीबू निचोड़कर फीका (चीनी नहीं) या फिर सादा पानी

(गर्म या ठण्डा) पीना चाहिए। इस बीच कम-से-कम दो बार गर्म पानी पीना चाहिए।

एक सप्ताह बाद मरीज को संतुलित भोजन करना चाहिए। प्रत्येक महीने आरम्भ के तीन दिन सिर्फ फलों का ही भोजन करना चाहिए।

भोजन, जिनमें स्टार्च, प्रोटीन तथा वसा की अधिकता हो, उनसे बचना चाहिए। साथ ही साथ माँस, चीनी, कड़क चाय या कॉफी, आचार, रिफाइंड, प्रोसेस्ड भोजन, साफ्ट ड्रिंक्स, आइसक्रीम, सफेद चीनी और मैदा से बनी चीजें नहीं खानी चाहिए।

तली चीजें अधिक खाना, मैदा से बनी हुई चीजें खाने से मुँहासे अधिक निकलते हैं। इन चीजों के खाने से पाचन-शक्ति कमजोर होती है, कब्ज होती है। मासिक-धर्म की खराबी से मासिक-धर्म के आसपास मुँहासे अधिक निकलते हैं। मासिक-धर्म ठीक होने पर मुँहासे निकलना बंद हो जाते हैं। फास्टफूड खाने पर संयम रखें, नहीं खायें तो सर्वोत्तम है। प्रातः के नाश्ते में अंकुरित अन्न चना, मूँग, मोठ लें। हर 15वें दिन उपवास रखें। रात को भिगोये हुए 10 मुनक्के पानी सहित सुबह सेवन करें। चेहरे पर भाप दें। सुबह की ओस चेहरे पर लगायें। प्रातः घूमने जायें। -क्रमशः

पृष्ठ 7 का शेष (देवपूजन, अमृत वर्षा, घरेलू अमूल्य बातें.............)

सिंहावलोकन करना चाहिए। (3) तेल का दीपक पापों का नाश करता है। (4) नारायण प्रभु की आरती में बहुमुखी विषम बत्तियाँ 3,5,1,9,11 संख्या में बत्तियों के दीपक से आरती करने से प्रभु जल्द प्रसन्न हो जाते हैं। (5) प्रभु की जो पूजा-पाठ-कर्म हम करते हैं, दीपक उनका साक्षी माना जाता है। (6) दीपक अंधकार को, अज्ञान को दूर भगाता है, दीपक ज्ञान का प्रतीक है। (7) घृत के दीपक को दाहिने हाथ की तरफ और तेल के दीपक को बांये हाथ की तरफ रखना चाहिए। (8) दीपक जलाकर हाथ अवश्य धो लेना चाहिए। दीपक से दीपक या दूसरी कोई भी चीज जलाने से पाप लगता है और दरिद्रता आती है। (9) संध्या को दीपक सूर्यास्त के समय जलाना चाहिए, जलाकर हाथ धोकर यह प्रार्थना श्रद्धा सहित करके पुष्प चढ़ाएं और उसके बाद एक बार फिर हाथ धो लें। फिर प्रार्थना करें :- **ॐ शुभम् करोति कल्याणम्, आरोग्यम् धन सम्पदा। मम शत्रु बुद्धि विनाशाय, दीप ज्योति नमोस्तुते॥**

नोट :- अखण्ड दीप ज्योति महाचेतना का, परम प्रकाश का प्रतीक है। घर में प्रकाश का ज्ञान, सुख-शांति का प्रतीक है, मगर अखण्ड दीप जलाकर रखने में अनेक कठिनाइयाँ हैं। चूहों से रक्षा रखनी, हवा से, पंखे से, छोटे-छोटे बालकों से, आग लग जाने का भय आदि-आदि सावधानियाँ संभव नहीं हो तो न जलावें। -क्रमशः

सीताराम शेरपुरी को "अरुण स्मृति काव्यश्री" सम्मान

काव्य लेखन में सक्रियता एवं स्तरीयता के लिए "उन्मुक्त" के सम्पादक सीताराम शेरपुरी को अरुण स्मृति काव्यश्री सम्मान-06 से सम्मानित किया गया। दलसिंह सराय की सक्रिय साहित्यिक संस्था "अभिव्यक्ति" के तत्वावधान में आयोजित पद्म श्री पोद्दार रामावतार "अरुण" स्मृति समारोह में आर.बी. कॉलेज, सराय के प्राचार्य डॉ. जवाहर लाल झा के कर कमलों से इन्हें ये प्रतिष्ठित सम्मान प्रदान किया गया।

विदित हो कि शेरपुरी को राष्ट्रीय स्तर पर अब तक अनेकों पुरस्कार/सम्मानों से अलंकृत किया जा चुका है। श्री शेरपुरी की इस उपलब्धि पर समस्त "सतयुग की वापसी" परिवार की ओर से बधाई एवं उन्नति के शतदल पर आसीन होने की कामना।

चूसता है वृद्धों का खून दहेज विरोधी कानून

✍ मोहनलाल मगो

दहेज़ मांगने वालों को जेल जाते देखा है और देखा है कि दहेज न दे पाने वाली लड़कियों का जलकर मरना भी। और देखा है दहेज विरोधी कानून का दुरुपयोग करने वाली लड़कियों का सास-ससुर को जेल भेजते हुए भी।

मैं स्वयं एक मध्यम वर्गीय परिवार का मुखिया हूँ। वस्तुस्थिति को ध्यान में रखते हुए मुझे पूरी सहानुभूति है जेल में सड़-तड़प रहे नौजवानों से और उनसे अधिक हमदर्दी है उन वृद्ध सास-ससुर से, जो अमूमन बेकसूर होते हैं, पुलिस हिरासत में या जेल में बिना खाये-पीये, क्योंकि जेल का नाम ही किसी नक्सली से कम दहशत देने वाला नहीं, क्योंकि लाए गये जेल में? क्या होगा कचहरी में? लड़की से कितना झूठ बुलवायगा उसकी पैरवी कर रहा वकील? क्या जज केवल सैद्धांतिक पक्ष पर ही बल देगा, जो अक्सर होता है या वह यथार्थ और तथ्यों पर पूरा विचार कर फैसला बतलाएगा? कब होंगे रिहा? या तथ्यों को विकृत रूप में जो अक्सर होता है, प्रस्तुत करने वाले वकील साहब के चक्कर में उमर कटेगी जेल में? बिना कसूर जाने। ऐसे किस्से हम सबके जाने-पहचाने हैं, समाचार पत्रों की सुर्खियों में होते हैं, ऐसी बदनाम दास्तानें।

आज सुहाग सुख देख चुकी लड़की परिणय-सूत्र में लगभग पच्चीस वर्ष की आयु तक नहीं बंधना चाहती। तब तक चिड़िया खेत चुगी होती है, पति के साथ जीवन का तालमेल बैठा सकने का स्वर्ण अवसर निकाल दिया होता है। जो पचास वर्ष पहले आज बाल-विवाह कहकर ठुकरा दिया जाता है, विवाह की प्रथा बहुत ही उम्दा प्रथा थी कि बालिका को डोली में बहू बनाकर ले आएं और बिटिया एवं उसकी ननद दोनों इकट्ठा खेलती-कूदती थी, घर में सुख-शांति बनी रहती थी। बहू नहीं थी वह कन्या, सुकन्या थी, सास-ससुर के कष्टों में द्रवित होती थी, दुःखी होती थी, सेवा-सुश्रुषा कर सुख देती थी उन्हें। आह! अब?

समय गतिमान है। आज पति नहीं रहा पति, माना जा रहा है एक बंधन। बंधन चाहे शादी का हो, यूटीवी के उपासकों को भाता नहीं। दहेज विरोधी कानून का दुरुपयोग करते हुए सामाजिक कुरीति का विकास हो रहा है। दहेज की मांग करना अगर सामाजिक कुरीति है तो अपने भूत की गलतियों का पर्दाफाश न हो, दहेज मांगने का जघन्य लांछन लगाकर वृद्ध सास-ससुर को हथकड़ी पहना देना, जिन्होंने अरमानों को संजोए, हीरे-मोतियों के कंगनों से हाथ सजाए थे। उससे बहुत ज्यादा बड़ी सामाजिक कुरीति बन गई है। इस समस्या का गहन-सघन अध्ययन होना चाहिए, सत्य को उजागर करना चाहिए। बस लड़की ने कहा पुलिस ने वृद्धों को जेल में ठूँस दिया। यह उपरोक्त दोनों कुरीतियों से भी बदत्तर कुरीति है। मैं समाज का ध्यान इधर आकृष्ट करता हूँ।

दहेज पीड़ित लड़कियों से ज्यादा नारी-पीड़ित पुरुषों की संख्या निश्चित ही अधिक है। हर घर में दहेज पीड़ित नहीं मिलती, परंतु घर-घर में नारी द्वारा पीड़ित मनुष्य अवश्य मिलते हैं।

इस लेख द्वारा मैं पुरजोर आवाज में कहना चाहता हूँ कि दहेज मांगने की शिकायत पर वृद्ध सास-ससुर को जेल न भेजा जाय, बल्कि उन पर कचहरी में मुकदमा चलाया जाय, दोषी होने पर ही पुलिस हाथ लगाए बूढ़ों को।

शेष पृष्ठ 19 पर

श्री हनुमान महिमा

✍ कैलाश जलोटा ''मंजु''

गतांक से आगे :-

चौ.-महिमा तासु जाय नहिं वरनी। शारद, शेष सराहैं करनी॥
संकटमोचन नाम तिहारो। निज भक्तन को सब दुःख टारो॥
मातु अंजनी के अति प्यारे। रहे राम के सदा दुलारे॥
तुमहिं भ्रातृ सुग्रीवहिं मानें। सकल जगत, गुण सदा बखाने॥
पवन समान चलौ बलवीरा। तुम सम कौन महा रणधीरा॥
धरती, गगन सराहैं तोको। लगे सदा प्रिय हनुमत मोको॥
सूर्यदेव नित देहिं असीसा। निष्कलंक तुम रहहु कपीसा॥
चंदन, वंदन, फूल, बतासा। भक्त चढ़ावहिं रखि मन आसा॥
सब मिलि तव आरती उतारैं। जय कपीस सब लोग उचारैं॥
हे बजरंगी हम तव दासा। पूरण करौ हमारी आसा॥
दोहा - हमें कछू नहिं चाहिये, केवल भक्ति तुम्हार।
करहु हमें हनुमन्त प्रिय, भवसागर से पार॥12॥
चौ.-अद्भुत छवि सब कर मन मोहै। चहुँदिशि प्रभु प्रसिद्धि तव सोहै॥
लोचन ललित ललाम सुहावैं। भक्तराज सबके मन भावैं॥
कुछ नहिं दुर्लभ जो तेहि सेवैं। सबकी नैय्या हनुमत खेवैं॥
मम अभिमत प्रिय जानौ भाई। हनुमत से हठि करहु मिताई॥
संकट सकल कटैं सुनु भ्राता। हनुमत से नहिं कोउ बड़दाता॥
प्रिय, पुनीत, पापन के नाशक। परम रम्य अनुशासित शासक॥
प्रबल देह अतिशय बलधारी। रावण देखो बल हुंकारी॥
रावणहू ने लोहा मानो। हनूमान को बल पहिचानो॥
लंका जारी बचा न पायो। हनूमान को पकरि न पायो॥
लंका घुसे निशाचर मारे। रावणहू के काज बिगारे॥
दोहा - चहूँ ओर जय घोष है, जय जय श्री हनुमान।
कृपा करहु करुणायतन, हे बलवीर महान॥13॥
चौ.-कर्म, वचन, मन ते जो ध्यावै। निश्चय ही मधु फल सो पावै॥
सब पै कृपा करैं रघुवीरा। साधें तिनके काज सुवीरा॥
गुरु समान तुम कृपा करौ नित। तब काहे को मन हो चिंतित॥
मैं अज्ञानी, मूढ़, प्रलापी। देहु, बुद्धि बल महा प्रतापी॥
कंचन देह महा बलवीरा। साहस सदा रखहु अति धीरा॥
मुख पै तेज विराजे नीको। सरस सदा कबहूँ नहिं फीको॥
बज्र देह ताते बजरंगी। रामभक्त हे प्रिय सतसंगी॥
प्रात तुमहिं भजि-भजि सुखवीरा। उतरहिं पार मिटै भव पीरा॥
सकल परीक्षा तुम सन हारी। आशिष सुरसा दई सुखारी॥
राम तुमहिं भरतहिं सम मानहिं। जग कल्यान करहु सब जानहिं॥
दोहा - अर्थ धर्म अरु काम तें, मोक्ष पाय संसार।
जो ध्यावे नित-नित तुमहिं, भवसागर हों पार॥14॥

-क्रमशः

पृष्ठ 4 का शेष

(सतयुग कब आयेगा ?.....)

यह कोई घर में बच्चों के साथ में बैठकर देखने का सीरियल है। इस सीरियल में औरत औरत न होकर दुकान हो गई कि बड़े भाई की मृत्यु हो गई, तो चाबी छोटे भाई को दे दी।''

मैं समाचारों के अलावा कोई अन्य कार्यक्रम दूरदर्शन पर नहीं देखता। अगर ऊपर लिखे गये सीरियलों की कहानी सच्ची है तो ऐसे सीरियलों को देखने वाली नारियों की गरिमा, महिमा, शील व सदाचार की कैसे रक्षा होगी और वे अपने बच्चों को कैसे श्रेष्ठ संस्कार दे सकेंगी और कैसे सतयुग वापिस आयेगा? माताओं एवं बहिनों से निवेदन है कि ऐसे सीरियल न तो स्वयं देखें और न अपने बच्चों को ही देखने दें।

-डॉ० मुरारी लाल अग्रवाल

पृष्ठ 8 का शेष

(चिरैंयाँ खेत चुनि......)

कर्म की खेती यह तन माटी,
कितनी बार बताया,
थका कबीर जगाते तन की,
रुई धुनि गई।
नींद भरि सोवत रह्यो किसान,
चिरैंयाँ खेत चुनि गईं॥5॥
अभी समय है जाग मुसाफिर
बिस्तर छोड़ के उठि जा,
सुनु गोहारि गुरूदेव लगायो,
परमारथ मा जुटि जा,
होई जीत तुम्हारि आपु से,
अगर ठन गई।
नींद भरि सोवत रह्यो किसान,
चिरैंयाँ खेत चुनि गईं॥6॥

-''गायत्री उपवन'' (मा.)
से जनहित में साभार

डॉ० ओमप्रकाश बरसैयाँ "ॐकार" सम्मानित

झाँसी के विख्यात कवि, साहित्यकार डॉ० ओमप्रकाश बरसैयाँ "ॐकार" छन्दाचार्य को उनके सतत् हिंदी साहित्य सृजन के लिए "मधुकर स्मृति हिंदी साहित्य संवर्द्धन संस्थान, झाँसी" द्वारा श्री सी.एल. ओझा "मधुकर" के जन्म-दिवस दिनांक 3/12/06 को आयोजित वृहद् कवि सम्मेलन में अंगवस्त्र, श्रीफल, स्मृति-चिन्ह व सम्मान-पत्र भेंट करते हुए अभिनंदन व सम्मानित किया गया। इसके पूर्व "ॐकार" जी को दर्जनों सम्मान पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। 72 वर्षीय "ॐकार" जी नव चेतना साहित्य एवं कला संस्थान (रजि.) व भारतीय वाङ्मय प्रथम अभियान संघ झाँसी के संस्थापक हैं। इन संस्थाओं के माध्यम से देश-विदेशों के हिंदी-साहित्यकारों को निरंतर उजागर करने में संलग्न हैं। विश्व हिंदी साहित्यकार संदर्शिका के पांच खण्ड सम्पादित व प्रकाशित कर चुके हैं। इस वर्ष छठे खण्ड का सम्पादन व प्रकाशन किया जा रहा है।

-उज्ज्वल गुप्ता, 9, जवाहर चौक, झाँसी

स्वास्थ्यवर्द्धक अति उपयोगी फल आँवला

डॉ. मनोहरदास अग्रावत, एन.डी. "आयुर्वेद शिरोमणि"
"विद्यावाचस्पति" (प्राकृतिक चिकित्सक)

आँवला अति उपयोगी फल है, हमारे आयुर्वेदिक ग्रंथों में आँवले का प्रयोग औषधि के रूप में अनेक रोगों को दूर करने वाला शक्तिवर्द्धक और स्वास्थ्यवर्द्धक बताया गया है। यह विशिष्ट गुण सम्पन्न है। इसके वृक्ष भारत के हर क्षेत्र में पाये जाते हैं। हिमालय की चार हजार फुट ऊँची पहाड़ियों से लेकर भारत के धुर दक्षिण और लंका तक तथा जम्मू से लेकर पूर्व में असम की गारो-खासी की पहाड़ियों तक इसके वृक्ष लहलहाते देखे जा सकते हैं। उत्तरी भारत में इनकी पैदावार बहुत अधिक है।

यह बहुत ही सहिष्णु पेड़ है। पाले और लू की समान रूप से उपेक्षा करता हुआ जंगलों, वाटिकाओं दोनों की शोभा बढ़ाने में सर ऊँचा किये रहता है। चाहे इस वृक्ष का फल जंगल से प्राप्त हो, चाहे अमीर के उद्यान से, समान रूप से गुणकारी होता है। हाँ स्वाद और आकार में कुछ अंतर हो सकता है। सस्ता होने के कारण यह गरीब की कुटिया में तथा विटामिन प्रधान होने के कारण अमीरों के राजप्रसादों में समान रूप से आदर पाता है।

उपयोगिता और मान्यता :- आज से हजारों वर्ष पूर्व भारत में आँवले को सर्वोत्तम रसायन की मान्यता प्राप्त थी। भारतीय महर्षियों ने इसके जीवनीय-गुणों का परीक्षण किया और इसे प्रथम आहार माना था। बाद में दुर्भाग्यवश ज्ञान के अंधकार युग में इसके भी गुण भुला दिये गये। अब पुनः वैज्ञानिक परीक्षणों ने इसकी महिमा को पुनर्जीवन देने में भरपूर सहायता दी है। कुन्नूर की आहार अनसुंधान शाला में आँवले के ऊपर जो प्रयोग किए गये हैं, उनसे आँवला विटामिन से परिपूर्ण पाया गया है।

सार्वजनिक रूप से इसका प्रयोग सबसे पहले सन् 1840 ई० में बिहार के अकाल के दिनों में किया गया था। अकाल पीड़ितों को आँवले के चूर्ण की बनी हुई टिकिया खाने को दी गई थी, इसका प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर बहुत अच्छा पड़ा था। उस प्रयोग की सफलता से उत्साहित होकर भारत सरकार ने आँवले की टिकियाँ पर्याप्त मात्रा में बाहर युद्ध क्षेत्रों में भेजी थीं।

आँवले की उपयोगिता पूर्ण रूप से सिद्ध हो चुकी है। अतः स्वास्थ्यवर्द्धक अति उपयोगी फल आँवले का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए। आँवला जनवरी से अप्रेल तक हरा मिल सकता है।

निहित तत्व :- वैज्ञानिकों ने अपने परीक्षणों से ज्ञात किया है कि आँवला फल में 9.6 प्रतिशत एसीटिक अम्ल, 35 प्रतिशत टेनिक व गेलिक अम्ल तथा 10 प्रतिशत ग्लूकोज होता है। इसके अतिरिक्त प्रोटीन 0.5 प्रतिशत, वसा 0.1 प्रतिशत, खनिज लवण 0.7 प्रतिशत, रेशे 3.4 प्रतिशत और कार्बोहाइड्रेट 4.1 प्रतिशत पाये जाते हैं।

विटामिन का तो यह भण्डार ही है। विटामिन-'सी' इसमें सबसे अधिक पाया जाता है। इसमें संतरे के रस से 20 गुना और सेव के रस से कई गुना अधिक विटामिन-'सी' पाया जाता है। यह विटामिन शारीरिक और मानसिक दोनों के विकास के लिए अति आवश्यक है। अतः यह बच्चों, बूढ़ों, नौजवानों और गर्भिणियों के लिए अति उपादेय है।

गुणधर्म और विशेषता :- आँवले में जीवनदायिनी शक्ति पाई जाती है। यह

शक्तिवर्द्धक और स्वास्थ्यवर्द्धक दोनों ही है। यह शरीर की ऊष्मा को सुरक्षित रखता है, नेत्रों की ज्योति बढ़ाता है, बालों की जड़ों को मजबूत बनाता है, दंत-पंक्तियों को उज्ज्वल चमक देता है। यह हृदय तथा मस्तिष्क को बल प्रदान करता है। यह मस्तिष्क के तंतुओं में तरावट रखता है। इसमें एक विशेष गुण यह भी है कि गर्म करने अथवा सुखाने पर इसकी यह शक्ति नष्ट नहीं होती। प्रायः सभी फलों के खाद्योज गर्म करने तथा सुखाने पर नष्ट हो जाते हैं, पर आँवले में कुछ ऐसे अम्ल तत्व होते हैं, जो इसको गर्म करने अथवा सुखाने पर इसके गुण को नष्ट नहीं होने देते।

महर्षि चरक का कथन है कि- *''संसार के अंदर अवस्था अस्थापक जितने द्रव्य हैं, उनमें आँवला सबसे प्रधान है।''* इससे पता चलता है कि आँवला आयुर्वेद के अंदर कितनी महत्वपूर्ण औषधि के अंतर्गत माना गया है। आँवला रक्तशोधक, वृद्धावस्था को युवावस्था-सी शक्ति देने वाला, अतिसार, प्रमेह, अम्ल-पित्त, रक्त-पित्त, वातपित्त, अजीर्ण, अरुचि, खाँसी, ज्वर इत्यादि रोगों का नाशक, नेत्र-ज्योति को तेज करने वाला, वीर्य को दृढ़ करने और आयु की वृद्धि करने वाला है।

आँवले की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह सभी प्रकार के प्रकृति वाले व्यक्तियों की सभी प्रकार के ज्वर, मूत्रकच्छ, योनिदाह एवं उपयुक्त अनेकानेक रोगों में रामबाण की तरह अचूक पाया गया है।

प्रसिद्ध यूनानी हकीम नफीजी महोदय ने आँवले के गुणों का वर्णन करते हुए बतलाया है कि- *''आँवला रुक्ष एवं किंचित शीतलगुण होने के कारण रक्तोष्मा को शांत करता है, रक्त को शुद्ध करने में सहायक होता है और रक्त को प्रकृतिस्थ बनाता है। संग्राही गुणों के कारण हृदय को बलवान बनाता है और बुद्धि को पुष्ट एवं पवित्र करता है।''*

आँवले के जल से प्रतिदिन स्नान करने से दाह, खुजली, जलन आदि विकार शांत होते हैं। नियमपूर्वक आँवला सेवन करने वालों को चर्मरोग नहीं होते और चर्म-विकृति की अवस्था में सेवन करने से भी बहुत लाभ होता है।

इसकी सेवन-विधि भी सुगम है। मुरब्बा व अचार के रूप में इसका लोकप्रिय प्रयोग तो सर्वविदित है। नमक और काली मिर्च के साथ इसका कच्चा फल बहुत स्वादिष्ट लगता है। भोजन के बाद इस रूप में इसका सेवन जठराग्नि को प्रदीप्त करता है। क्षुधा को बढ़ाता है। रक्त को साफ रखता है और दाँतों को मोती की तरह चमकाने लगता है व शरीर को निरोगता प्रदान करता है। आँवले की चटनी भी बनाई जाती है। धनिया, पुदीना के साथ खटाई के स्थान पर इसका प्रयोग गुणकारी होता है। इसके सूखे टुकड़े सुपारी की तरह खाये जाते हैं। आँवले को आग में भूनकर नमक के साथ भुरता बनाकर खाया जाता है। भोजन के साथ या बाद में इसके सेवन से परिपाक ठीक रहता है और मस्तिष्क में स्फूर्ति बनी रहती है। त्रिफला एवं अन्य भेषजों में इसका प्रयोग भेषजीय रूप में होता है।

कुछ प्रयोग :- (1) आँवले का चूर्ण शहद के साथ खाना, हृदयोद्वेग, मंदाग्नि और दुर्बलता में बहुत लाभदायक होता है।

(2) आँवले के पत्तों को पानी के साथ उबालकर कुल्ला करने से मुँह के छाले नष्ट हो जाते हैं, क्योंकि इसके पत्तों में टेनिक एसिड का भाग पाया जाता है।

(3) आँवले के बीज की मगज को कूटकर गर्म पानी में उबालकर उस पानी से

आँखें धोने से बहुत दिनों की दुःखी हुई आँखें अच्छी होती हैं।
(4) दही के साथ आँवले का सेवन करने से रक्त-पिंत्त (नकसीर) में लाभ होता है।
(5) **हृत्कम्प**- आँवला सूखा और मिश्री दोनों 50-50 ग्राम लेकर बारीक कूट-पीस-छानकर सुरक्षित रख लें। प्रतिदिन 6 ग्राम (आधा तोला) औषधि पानी के साथ सेवन करने से कुछ ही दिनों में हृदय के सभी रोग दूर हो जायेंगे। अत्यंत सस्ता, परंतु अनुपम योग है।
(6) हरड़, बहेड़ा, आँवला, सोंठ, काली मिर्च और पीपल सभी को समभाग लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। प्रतिदिन 3-3 ग्राम यह चूर्ण शहद के साथ चाटने से हर प्रकार की खाँसी दूर हो जाती है।
(7) मस्तक-शूल (सिरदर्द) पर प्रातःकाल आँवले का चूर्ण, घी और शक्कर के साथ देना चाहिए।
(8) खुजली पर आँवले की राख को खोपरे के तेल (नारियल के तेल) में मिलाकर शरीर पर लगाना चाहिए। इससे खुजली मिटती है।
(9) रात्रि के समय आँवले का चूर्ण दूध के साथ लेने से दस्त साफ होता है व बालों एवं नेत्रों को बल मिलता है।
(10) सूखे आँवले को पीसकर कपड़े से छानकर रख लें और नीबू के रस में मिलाकर मेंहदी की तरह बालों (केशों) में लेप करते रहें। ऐसा करने से बाल काले हो जाते हैं तथा चमकीले होकर बाल बढ़ते हैं। अंग्रेजी खिजाबों की भांति यह लेप दिमाग को नुकसान नहीं पहुंचाता और आँखों को गर्मी नहीं पहुँचाता, बल्कि नेत्र-ज्योति, मानसिक-शक्ति, स्मरण-शक्ति को बढ़ाता है तथा मस्तिष्क व नेत्रों में तरी बढ़ाता है।

-मनोहर आश्रम, उम्मैदपुरा, पो०-तारापुर-458 330 (जावद-म.प्र.), जिला-नीमच

"वीणा" के श्रेष्ठ सम्पादन के लिए "बृजलाल द्विवेदी पत्रकारिता सम्मान" इंदौर के डॉ. व्यास को मिला

रायपुर। पं. बृजलाल द्विवेदी स्मृति अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान-2006 देश की सर्वाधिक प्राचीन मासिक पत्रिका "वीणा" के सम्पादक डॉ. श्यामसुंदर व्यास को प्रदान किया गया है। अक्टूबर-1927 से इंदौर से सतत् प्रकाशित होने वाली "वीणा" के 80 वर्ष के साहित्यिक योगदान के लिए इस सम्मान के लिए चुना है, जिसके डॉ. व्यास पिछले 35 सालों से सम्पादक हैं।

पं. बृजलाल द्विवेदी स्मृति अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान समिति की संयोजिका श्रीमती भूमिका द्विवेदी ने बताया कि हिंदी की स्वस्थ पत्रकारिता को समादृत करने के उद्देश्य से इस पुरस्कार की शुरुआत की गई है। फैजाबाद में जन्मे पं. बृजलाल द्विवेदी साधु प्रकृति के व्यक्ति थे तथा आजीवन लोकमंगल के कार्यों में रत् रहे। उनकी पावन स्मृति को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए यह सम्मान स्थापित किया गया है। इस राष्ट्रीय सम्मान के अंतर्गत किसी साहित्यिक पत्रिका का उत्कृष्ट सम्पादन करने वाले सम्पादक को 11 हजार रुपये व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया जाता है। पहले पं. बृजलाल द्विवेदी स्मृति अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान के लिए निर्णायक मण्डल ने हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता में यशस्वी योगदान के लिए "वीणा" को चुना है। इस पत्रिका के सम्पादक को यह सम्मान देने से इस पुरस्कार की ही प्रतिष्ठा बढ़ी है।

3 सितम्बर 1927 को इंदौर में जन्मे डॉ. श्यामसुंदर व्यास शासकीय कला एवं वाणिज्यिक महाविद्यालय इंदौर से आचार्य पद से 1987 में सेवानिवृत्त हुए हैं। 35 वर्षों से "वीणा" का सम्पादन करने के अलावा उन्होंने शोधार्थियों का निर्देशन, लेखन किया है। उपन्यास, व्यंग्य,

 शेष पृष्ठ 20 पर

जिसने मरना सीख लिया, जीने का अधिकार उसी को

श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

जो जाति बलिदान देने को तैयार रहती है, उसे ही संसार में जीवित रहने का अधिकार प्राप्त हो सकता है। जो बलिदान देने को, जीवन को देने को तैयार नहीं, उसे जीवित रहने का अधिकार नहीं है। आर्य जाति की इस समय यही दशा है। यह जाति येन-केन-प्रकारेण, जिस किसी भी प्रकार से जी लेने को तैयार है। मात्र जी लेने को-चाहे इसे पददलित होकर जीने का अवसर मिले, तो भी इसे सहर्ष स्वीकार है।

केंचुए नामक कीट को देखिए। वर्षा ऋतु में वह मार्ग में पड़े गिजबिजाते रहते हैं। छोटे-छोटे बच्चे भी उन्हें कुचलते हुए चले जाते हैं। वे बेचारे या तो गिजबिजा कर रह जाते हैं और या वहीं पैरों में कुचले जाकर मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं। उनमें प्रतिकार का साहस या शक्ति की तो बात क्या कहनी? जान बचाकर भागने का भी, कहीं किसी घास के ढेर में छिपकर जान बचा लेने का भी साहस और सामर्थ्य नहीं होता।

ठीक यही दशा वर्तमान काल में इस आर्य-संतान तथा राम-कृष्ण की प्यारी जाति की है। उस राम की संतान है यह, जिसने अपने वनवास के समय में जब ऋषियों की हड्डियों का ढेर देखा और वहाँ के निवासियों से उनके विषय में पूछा तो उन्होंने बताया कि राक्षसों द्वारा मारे गये ऋषियों की यह अस्थियाँ हैं। बस फिर क्या था, उनकी भवें तन गईं और उन्होंने तत्काल अपने धनुष की डोर को टंकार कर हाथ ऊपर उठाया और कहा-''**निशिचर हीन करहुँ महि, हाथ उठा प्रण कीन्ह**'', अर्थात् मैं पृथ्वी पर से निशिचरों (राक्षसों) को मिटाकर उनके इस प्रकार के कुकृत्यों से पृथिवीस्थ मानवों की रक्षा करूँगा।

कृष्ण की बात क्या कही जाय? उन्होंने मोहग्रस्त युद्ध से मुँह मोड़ने वाले गाण्डीवधारी पाण्डु पुत्र अर्जुन को कहा था-''इस प्रकार युद्ध के मैदान में शस्त्र छोड़कर मोहवश युद्ध से विमुख होना क्षत्रिय को शोभा नहीं देता। यह तो 'अनार्य जुष्टं' अनार्यों के द्वारा चाहा हुआ कर्म है। हे कुंती पुत्र! यह निश्चय करके क्षात्र धर्म का पालन करना चाहिए कि-

हतो वा प्राप्स्यति स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मात् उतिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चय॥''

अरे, यदि युद्ध करने से क्षात्र-धर्म का पालन करते हुए मारा जायेगा तो मोक्ष-सुख को प्राप्त होगा और युद्ध में विजय प्राप्त कर लेगा तो पृथ्वी के, राज्य के सुख भोगेगा। तब अर्जुन ने कहा था-

''**स्मृतिर्लब्धवा गत सन्देहः करिष्ये वचनं तव।**'' केशव! मुझे होश आ गया है, मैं समझ और सम्भल गया हूँ, अब जैसा आप कहोगे, मैं वैसा ही करूँगा। कृष्ण के उपदेश से सावधान होकर अर्जुन ने युद्ध किया, विजय श्री का वरण किया तो आज अर्जुन का नाम इतिहास में न केवल अमर है, अपितु सम्मान के साथ लिया जाता है। इससे पहले रघुवंश नंदन राम ने अपनी प्रतिज्ञा '**निशिचर हीन करहुं मही**' को पूर्ण किया तो त्रेतायुग से अब तक उनका नाम अमर है और लोग उन्हें ईश्वरावतार के नाम से सम्मानित करते हैं।

आजकल की राम की संतानें तुलसीदास कृत रामचरित मानस को पढ़कर ही अपने को कृतकृत्य और सौभाग्यशाली समझती हैं। जिस गीता को सुनाकर कृष्ण ने

अर्जुन से शस्त्रास्त्र उठवाकर दुष्ट दुर्योधन को दलबल सहित धरती से मिटा दिया, उस गीता के स्थान पर जासूसी और वासनात्मक उपन्यास पढ़े जाते हैं। गीता का तो नाम लेना भी स्वीकार नहीं करते और यदि कोई युवक गीता पढ़ने लगता है तो उसके अभागे माता-पिता ही दुःखी होते हैं कि यह तो गीता पढ़ने लगा, बस अब साधु हो जायेगा और इस प्रकार हमारे वंश का नाम डुबायगा।

विचित्र बात यह है कि जिस गीता के आदेश से शस्त्रास्त्र छोड़कर साधु होकर सूखे टुकड़े खाने के मार्ग पर चलने के लिए उद्यत अर्जुन युद्धरत बना, उसका साधुभाव तिरोहित हो गया, उस गीता को पढ़कर साधु होने की भावना आज़ जाति के लोगों के मनों में घर कर गई है। गीता का उपदेश जो युद्ध से विरत हुए अर्जुन को युद्धरत करके क्षात्र-धर्म का पालन कर विजय श्री प्राप्त करा सकता है, वह वैराग्य से उत्पन्न कायरता के **'अनार्य जुष्टं'** कर्म के मार्ग पर क्यों चलने लगा। इस जाति की इतनी उल्टी बुद्धि किस प्रकार हो गई? हमारी जाति के युवक तो अब पाण्डव सेना में नहीं, अपितु किन्नर-संस्कृति में दीक्षित होते जा रहे हैं। यह तो अब बारात की चढ़त में दूल्हा मियाँ की सवारी के आगे शराब पी-पीकर नाचने में ही गौरव की अनुभूति करते हैं।

आर्य समाज़ में भी कुँवर सुखलाल जी जैसे वाग्मी नहीं है, जो मंच पर भाषण करने से पहले ईश्वर से यह प्रार्थना कर सकें-**''जाति को जीवन दो भगवान''** तथा जाति के युवकों को यह गीत सुना सकें-

''तू ही तो भगवान राम है, तू ही तो घनश्याम है।
तेरे हाथों कंस असुर, रावण का काम तमाम है॥''

और- **''बढ़ो जवानों, मोह छोड़कर जान-माल-परिवार का।**
युद्ध की वेला में भला क्या काम है, सोच-विचार का॥''

यह वीर-रस की भावनायें राम-कृष्ण के भक्तों को गत लगभग एक सौ पच्चीस वर्षों से आर्य-समाज का मंच यही पाठ पढ़ाने का कार्य करता रहा, परंतु युवक जागने को तैयार नहीं। दूसरी ओर यवन-युवक हैं, जो जिहाद के नाम पर आपको मिटाने के लिए स्वयं मर-मिटने को तैयार हैं। पाकिस्तान आदि दूसरे देशों से यहाँ सीने में बम बाँधकर फिदायीन अर्थात् बलिदानी बनकर आते हैं और भारत के सैनिक ठिकानों तक पर आक्रमण कर देते हैं। स्वयं मरकर आप लोगों को मारने को समुद्यत रहते हैं, दूसरी ओर हमारे युवक हैं, जो जान बचाने के ही येन-केन-प्रकारेण प्रयत्न करते रहते हैं। यही कारण है कि यवन-युवकों का साहस बढ़ रहा है। यदि हमारे युवकों में बलिदान की भावना होती, तो इन म्लेच्छो को इतना साहस कदापि नहीं हो सकता था। यदि हमारे युवकों में राष्ट्रीय तथा जातीय भावनायें होतीं तो म्लेच्छो का यह साहस कदापि नहीं होता कि वह दिल्ली के लालकिले में घुसकर बमों का प्रयोग करते। भारतीय संसद-भवन में घुसने और उस पर आक्रमण करने का साहस करते। गुजरात में गोधराकाण्ड तथा अक्षरधाम-काण्ड करते, जम्मू के रघुनाथ मंदिर पर आक्रमण करते। वास्तविकता यह है कि वह जानते हैं कि शिवसेना के त्रिशूल, बजरंग दल की गदायें मार्ग में प्रदर्शन कर मन बहलाने के लिए है, इससे अधिक कुछ नहीं। वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को भी भलीभाँति जानते हैं कि संघ स्थल पर पैर पीटने तथा पथ-संचलन के अतिरिक्त यह कुछ कर सकने में लेश मात्र भी

समर्थ नहीं है। आर्यवीर दल के शिविरों और सम्मेलनों के समाचार पढ़कर मुझे लगता है कि वीरत्व तो कहीं है ही नहीं, प्रदर्शन मात्र है। मात्र पत्र-पत्रिकाओं में वक्तव्य और चित्र छपवा लेने से कुछ नहीं होता है। विश्व हिंदू परिषद् ने क्यों नहीं बलिदानी टोलियाँ तैयार कीं?

जो मात्र प्रदर्शन की भावनाओं से भरे हुए हों, उनमें कर्त्तव्य कहाँ से आयेगा। भारत सरकार भी परेशान है, वह शांतिवार्ता तक ही सीमित है। जिनकी केंद्र में सरकार है, वह सोनिया गाँधी कहती है हमारी सरकार को झुकाया नहीं जा सकता, यद्यपि सरकार झुकी पड़ी है। हमारी सरकार में दम होता तो **'कड़े विरोध पत्र'** भेजकर संतोष क्यों कर लिया करती? जब हम में ही दम नहीं तो हमारी सरकार में में ही दम कहाँ से आना है? सरकार को भी पता है कि जो भारत में राष्ट्र हैं, जो राष्ट्रभक्ति का प्रदर्शन और चर्चा करते हैं, वह सब 'अनार्य जुष्टं' कर्म करने में लगे हैं, अन्यथा सरकार न केवल पाकिस्तान अपितु विश्व को दिखा देती कि यदि आतंकवाद का प्रयोग बंद न हुआ तो आतंकवादियों को हम सब बलिदानी-युवकों द्वारा उनके कुकर्मों का दण्ड देंगे। यहाँ तो सैनिकों के बल पर ही थोड़ा जीवन है, अन्यथा मुखाकृतियों पर तो मुर्दनी छायी हुई है। पाकिस्तान के युवक सेना का प्रयोग और प्रदर्शन देखने में नहीं लगे हैं, वह तो सेना से पहले स्वयं जूझ रहे हैं। भारत के युवकों में भी यदि यह जीवन आ जाये तो पाकिस्तान का आतंकवाद और जनरल मुशर्रफ की इस्लामी जिहाद की धमकी रखी ही रह जायेगी।

अन्यों की तो मैं चर्चा कर चुका हूँ, भारत के सैनिकीकरण की बात करने वाले स्वातंत्र्यवीर सावरकर के नाम पर हिंदू-महासभा ही हिंदू-युवकों के सैनिकीकरण का कार्यभार अपने कंधों पर ले ले और हिंदू-सेना (वीर सावरकर सेना) का गठन कर बलिदानी (फिदायीन) हिंदू वीर तैयार करे। यह स्मरण रखना चाहिए कि-

''जिसने काँटे पार कर लिये, फूलों के उपहार उसी को।
जिसने मरना सीख लिया है, जीने का अधिकार उसी को॥''

-अध्यक्ष : वैदिक संस्थान नजीबाबाद, बिजनौर (उ०प्र०) 246 763

पृष्ठ 11 का शेष (चूसता है वृद्धों का खून दहेज विरोधी कानून..........)

आवश्यकता है मुकदमा केवल सिद्धांत पर ही आधारित न हो। लड़के और उसके रिश्तेदारों की दलीलों के तथ्य पर पूरा गौर होना चाहिए, ताकि न्याय हो सके। न्याय एक तरफा नहीं, न्याय बिक न सके, क्योंकि मैं ऐसे भी परिवारों को जानता हूँ, जो शराबी भाई-पिता शादी होते ही लड़के को धमकी दे देते हैं कि अमुक धनराशि उन्हें देता रहे, तो दहेज मांगने के झूठे मुकदमे से बचा रहेगा। इस प्रस्ताव को लड़का न कह भी नहीं सकता।

दहेज खूब दिया जा रहा है, लिया जा रहा है। पुलिस अधिकारी हो या समाज-सेवक, दहेज मांगने वालों को जेल भेजने वाला जज हो, सभी तो लेते हैं दहेज, फिर इस परम्परागत सामाजिक रीति निभाने में पुलिस का क्या काम?

दहेज की भीख मांगने वाले के कंटोरे में, भारतीय-संस्कृति के अनुकूल कुछ जूठन डाल देनी चाहिए, ताकि- **''मांगन ते मरना भला, मत कोई मांगने जाहि। उनसे पहले वे मरे, जिन मुख निकसत नाहि॥''**

-132-ए, पाकेट-I, मयूर विहार-I, देहली-91

चिंतन सत्संग

सत्संग परमपिता परमात्मा की दया के बिना नहीं मिलती है। इस संसार में सत्संग एक दुर्लभ वस्तु है, जो ईश्वर की कृपा से ही प्राप्त होती है। तुलसीदासजी ने ठीक ही कहा है-''बिनु हरि कृपा मिलहि नहीं सन्ता''। सत्संगति ही आपत्ति-काल में धैर्य और सांत्वना मिलने का साधन है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। स्वभाव से ही अकेला नहीं रह सकता। साथियों की मनुष्य ही क्या, पशुओं तक की अनिवार्य आवश्यकता है। सभी पशु-पक्षी अपने-अपने समूह के साथ में रहना पसंद करते हैं। सज्जन साथी सौभाग्य से ही मिलते हैं। मनुष्य भी सदैव उसके मित्रों से ही पहचाना जाता है। यदि हमारे साथी उच्चकोटि के हैं, तो फिर हमें उनसे भी उच्च श्रेणी के होने में संदेह ही नहीं है। इसीलिए तो कहते हैं कि मित्र काफी सोच-समझकर और पहचान कर बनाना चाहिए। यदि बुरे मित्र की संगति में हम पड़ गये तो फिर हम पर उसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहेगा।

तुम्बा एक काम न्यारे, नदी पार ये उतारे, साधु-संत पास रहे, सुपात्र कहाता है।
वाद्य यंत्र बने जब, सातों स्वर गूँजे तब, संगीतज्ञ झूम-झूम, प्रभु गुण गाता है॥
शराबी-कबाबी पास, भरे दारू और मांस, जैसी संगति में रहे, वैसा नाम पाता है।
कुसंग को छोड़ प्राणी, सुधरेगी जिन्दगानी, ''पारदर्शी'' सत्-संग, सज्जन सजाता है॥

मनुष्य तीन प्रकार के हैं। प्रथम-''उत्तम'' अंगूर की तरह होते हैं, जो अंदर और बाहर एक से होते हैं। दूसरे-''मध्यम'' बादाम की तरह होते हैं, जो ऊपर से कठोर पर अंदर से मीठे होते हैं। तीसरे-''निम्न'' बेर की तरह होते हैं, जो ऊपर से मीठे और कठोर होते हैं। कौन मनुष्य कैसा है, यह जानना कठिन है। जिनका मनोबल बढ़ा हुआ होता है और जो दूसरों के मन का अध्ययन करना सीख लेते हैं, वे मनुष्य इन्हें शीघ्र पहचान लेते हैं।

मनुष्य जैसी संगति में रहेगा, वैसा ही बन जाएगा। सत्संग का प्रभाव प्राणी पर जितनी अधिक मात्रा में पड़ता है, उतना किसी और बात का नहीं। गुणी, विद्वान और अनुभवी व्यक्तियों के साथ रहने से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। जैसे स्वाति की बूँद केले पर पड़कर कपूर, सीप में मोती और सर्प के मुख में विष बन जाती है।

संगत की रंगत चढ़े, बैठो सोच विचार। सर्प ''पारदर्शी'' करे, दूध जहर की धार॥

-चिंतक : ॐ ''पारदर्शी'', उत्तरी ऑयड़, उदयपुर-313 001

पृष्ठ 16 का शेष (''वीणा'' के श्रेष्ठ सम्पादन के लिए...............)

कहानी, लघुकथा, नाटक, समीक्षा समेत हिंदी की सभी विधाओं में उनकी लगभग 26 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। पं. बृजलाल द्विवेदी स्मृति अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान से पहले डॉ. व्यास साहित्य वाचस्पति, भारत भाषा भूषण, साहित्य भूषण और अक्षरादित्य जैसे पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं। सम्मान के निर्णायक मण्डल में सर्वश्री विश्वनाथ सचदेव, विजयदत्त, श्रीधर, रमेश नैयर, सच्चिदानंद जोशी, गिरीश पंकज शामिल थे।

-भूमिका द्विवेदी, ए-2, अनमोल फ्लेट्स, अवन्ति विहार कालोनी, रायपुर-492 001

सौ दवा, एक दुआ-माँ-बाप की दुआ

✍ प्रकाश डी. गुन्डेचा, जोधपुर

अगर तुम श्रवण कुमार की माँ बनना चाहती हो तो पहले अपने पति को श्रवण कुमार बनाकर पति के माँ-बाप का आज्ञाकारी बनना व बनाना, ताकि तुम्हें देखकर तुम्हारा बच्चा भी श्रवण कुमार जैसे संस्कार ग्रहण कर सके। बचपन में जिस माँ-बाप ने तुमको पाला, उनके बुढ़ापे में यदि तुमने उनको नहीं सम्भाला, तो तुम्हारे भाग्य में ऐसी ज्वाला भड़केगी कि तुमको कहीं का नहीं छोड़ेगी।

घर में वृद्ध माँ-बाप से बोले नहीं, उनको सम्भाले नहीं और वृद्धाश्रम व जीवदया में दान करें, ऐसे व्यक्ति को दयालु कहना....दया का अपमान है। दो किलो का वजन उठाने से तुम्हारे हाथ दुःख जाते हैं, माँ को सताने से पहले सोचो कि उसने तुम्हें 9 महीनों तक पेट में कैसे उठाया होगा। बचपन में तेरे माँ-बाप तेरी अंगुली पकड़कर स्कूल ले जाते थे। बुढ़ापे में उनका सहारा बनकर धर्म-स्थान जरूर ले जाना, शायद तेरा थोड़ा कर्ज पूरा हो जाये। माँ-बाप को सोने से न मढ़ो चलेगा, हीरे से न जड़ो चलेगा, पर उनका कलेजा जले और वे अंदर से आँसू बहायें-यह नहीं चलेगा। ऐसी बद्दुआ मत लेना। जिनके जन्म पर माँ-बाप ने हँसी-खुशी में पेड़े बांटे, वे ही बेटे जवान होकर माँ-बाप को बांटें। हाय यह कैसी करुणा, कैसी दया, कैसी विडम्बना....! पत्नी पसंद से मिल सकती है, पर माँ-बाप पुण्य से ही मिलते हैं। पसंद से मिलने वाली के लिए पुण्य से मिलने वालों को मत ठुकरा देना। यदि ठुकराया तो तेरा पुण्य तेरे से रूठ जायेगा व तुझे दर-दर की ठोकरें खाने के लिए छोड़ देगा। ऐसे में भविष्य में तेरी औलाद भी तुझे छोड़ देगी। पेट में पाँच बेटे जिस माँ को भारी नहीं लगते, वो माँ-बाप पाँच बेटों को अलग-अलग मकान में भी भारी लग रहे हैं। कबूतर को दाना, गाय को चारा डालने वाली औलाद यदि माँ-बाप को दबाये, तो ऐसे दाने व चारे में कोई दम नहीं। जिस नन्हे-मुन्ने को माँ-बाप ने बोलना सिखाया, वही बच्चा बड़ा होकर माँ-बाप को चुप रहना सिखाता है। जिस दिन तुम्हारे कारण तुम्हारे माँ-बाप की आँखों में आँसू हैं, याद रखना उस दिन तुम्हारा किया हुआ सारा धर्म-कर्म उन आँसुओं में बहकर व्यर्थ हो जायेगा। मंदिर की माँ को चुनरी ओढ़ावें और घर की माँ से लड़ाई-झगड़ा करे, ऐसे में मंदिर की देवी माँ तुझसे राजी तो नहीं पर नाराज जरूर हो जायेगी। बचपन में गोद देने वाली माँ को बुढ़ापे में दगा देने वाला मत बनना। यदि आप अपना भविष्य अच्छा चाहते हैं तो घर में बच्चों को सेवा के संस्कार देकर बड़ों की सेवा करना सिखायें। नित्य माँ-बाप को प्रणाम करके ही फिर खाना-पीना शुरू करें, ताकि आपके बच्चे भी विनय के संस्कार सीखें। नित्य माँ-बाप के पास कुछ समय बिताकर उनके सुख-शांति का ध्यान रखें। अपने बच्चों को अपने दादा-दादी के सम्पर्क में रखें व उन्हें बड़ों की सेवा, विनय, आज्ञापालन करना सिखायें। बचपन के संस्कार जिंदगीभर रहते हैं, कच्चे घड़े को जिस ढंग से ढालोगे, ढल जायेगा। अतः बच्चों में अच्छे संस्कार भरें, न कि आधुनिकता भरें। बच्चों को खान-पान, चाल-चलन, वेशभूषा, मर्यादित व सात्विक रखें, ताकि उनमें सात्विकता पनपे।

धर्माचार्यों का पाखण्ड

डॉ० परमलाल गुप्त, संयोजक-अ.भा.ग. साहित्यकार परिषद्

मध्यप्रदेश के उत्तरी सीमांत में उत्तरप्रदेश से लगा हुआ एक तराई क्षेत्र है, जो पहाड़ों और जंगलों से ढका हुआ है। वहाँ पहाड़ से लगी हुई एक नदी बहती है, जो ऊँचाई से गिरकर नीचे एक कुण्ड बनाती है। उसी की बगल में एक गुफा है, जिसमें पानी की एक धारा बहती हुई कुण्ड में उस नदी से मिल जाती है। इस गुफा में पानी की रगड़ से एक शिवलिंग बन गया है। लगभग चालीस वर्ष पहले की बात है कि एक पढ़ा-लिखा युवक वहाँ पहुँचा और कुटी बनाकर रहने लगा। एक ओर पहाड़ और खड्ड के कारण वह डाकुओं और तस्करों का अड्डा था। उस युवक ने उनसे दोस्ती कर ली। इसका फल यह हुआ कि उसे भोग की सब वस्तुएँ उपलब्ध हो गईं और इसी के साथ एक सिद्ध महात्मा के रूप में उसकी प्रसिद्धि गाँवों, फिर नगरों में फैल गई। वहाँ पहुँचने का रास्ता नहीं था और न वहाँ कोई जाता था, क्योंकि वहाँ जंगली जानवरों, भूत-प्रेत आदि का डर था। लोगों में तरह-तरह की अफवाहें फैलीं, जैसे कि वह महात्मा शेर के साथ रहता है, वह अदृश्य होकर फिर कभी प्रकट हो जाता है आदि। कालांतर में वहाँ जाने के लिए सड़क बन गई। सैकड़ों श्रद्धालु वहाँ जाने लगे। शहर के बड़े-बड़े पूँजीपति उसके शिष्य बन गये। एक शिष्य ने शहर में ही उनके ठहरने के लिए एक बड़ा तिमंजिला भवन बनवाया, जो सभी आधुनिक सुविधाओं-एअर कंडीशनर, टी.वी., दूरभाष, पलंग, गद्दे-तकिया आदि से युक्त थे। इसे आश्रम कहा जाता है। कभी-कभी स्वामी जी यहाँ आते हैं, तब वे पूँजीपति उनके लिए पलक-पाँवड़े बिछा देते हैं। पूजा-पाठ, हवन, भण्डारा आदि होता है। स्वामी जी का प्रवचन भी होता है, जिसे सुनने के लिए भीड़ उमड़ती है।

यह एक उदाहरण है। ऐसे हजारों आश्रम, मठ-मंदिर आदि देश के कोने-कोने में विद्यमान हैं। देश में हजारों साधु-संत, संन्यासी, पुजारी, कथावाचक, प्रवचनकर्ता आदि हैं। जनता इन पर श्रद्धा रखती है, परंतु ये सब समाज के खर्च पर पलने वाले भोगी जंतु हैं। आये दिन आश्रमों, मठों-मंदिरों आदि में बलात्कार और प्रेम-प्रसंगों के समाचार आते रहते हैं। यदि कोई सच्चा वैरागी है, तो उसे फिर कभी लोगों के बीच नहीं आना चाहिए और उसे एकांत में ऐसी जगह रहना चाहिए, जहाँ किसी का कोई सम्पर्क न हो, परंतु ऐसा नहीं है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि भारत के हजारों साधु-संतों का यह कर्त्तव्य है कि वे गाँवों में जाकर सारे देश को शिक्षित करें और उन्हें गरीबी और मुफलिसी से उबारें। परंतु पूँजीपतियों के स्वार्थ और अशिक्षित तथा गरीब जनता के अविवेक और अंध-श्रद्धा का लाभ उठाकर बड़े-बड़े मठाधीश अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। प्रवचनकर्ता और कथावाचकों ने इसे अपना व्यवसाय बना लिया है। मंदिरों में अभी तक देवदासी-प्रथा चल रही है। भोली और अनाथ कन्याओं को बहकाकर उनका विवाह भगवान से करा दिया जाता है और उनका भोग भगवान के तथाकथित प्रतिनिधि करते हैं। इन सारे साधु-

संतों, संन्यासियों, पुजारियों, कथावाचकों, प्रवचनकर्ताओं को इस बात से कोई मतलब नहीं है कि देश में इतनी विषमता और गरीबी क्यों है, समाज में ऊँच-नीच, छुआछूत आदि का भेदभाव क्यों चल रहा है, धर्मनिरपेक्षता के नाम पर राजनीति में वोटों के स्वार्थ के लिए राष्ट्र और उसकी संस्कृति का क्षरण क्यों किया जा रहा है, आतंकवाद में हजारों नागरिक क्यों मर रहे हैं, जब देश का बंटवारा हुआ था, तब पाकिस्तान में हिंदुओं की संख्या बीस प्रतिशत थी, अब दो प्रतिशत क्यों हो गई और भारत में मुसलमानों की संख्या छः प्रतिशत थी, अब चौदह प्रतिशत क्यों हो गई है। इन सभी धर्माचार्यों को यह समझना चाहिए कि जब देश में हिंदुत्व नहीं रहेगा, तब क्या उनका स्वयं का अस्तित्व सम्भव है। तब शंकराचार्यों की सोने की पालकी को कंधा कौन देगा? कांची कामकोटि मठ के शंकराचार्य के प्रकरण से भी उनकी आँखें नहीं खुलतीं।

शाँतिकुंज हरिद्वार का भ्रष्टाचार पहले से चर्चा में है। "सतयुग की वापसी" के इस अंक में जैन मुनियों के भ्रष्टाचार का भी चिट्ठा है। मैं इस सम्बन्ध में "अन्तराल" पत्रिका के जुलाई-2006 के अंक में प्रकाशित डॉ० ओमप्रकाश सिंह की निम्न कविता उद्धृत करना चाहता हूँ :-

फूलों की शैय्या पर बैठे संत-शिरोमणि व्यापारी।
त्याग दूर जाकर बैठा है, मर्यादा ओढ़े आश्रम और तपस्या सुलग रही है,
जलते निगम और आगम, धूप-छांव-सी आँख मिचौली खेल रहे भ्रष्टाचारी॥
व्यास गद्दियों पर सोने के झूल रहे हैं सिंहासन,
अब अभाव के घर कुबेर का रात-दिवस लगता आसन,
यहाँ-वहाँ प्रवचन करते हैं, कौन रोग क्या बीमारी॥
हत्या, भय, आतंक द्वार पर खड़े धर्म आचार्यों के,
राजनीति पाँवों के नीचे काँप रही हत्यारों के,
हर गोरख-धंधे में इनकी-उनकी है साझेदारी॥

मैं ब्राह्मणवाद, उसके द्वारा प्रवर्तित कर्मकाण्ड, जातिवाद, ऊँच-नीच, छुआछूत आदि का पक्षधर नहीं हूँ। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि हिंदू-समाज को ब्राह्मण रूपी सर्प ने डंसा है, यदि वह अपना विष वापस ले ले तो यह समाज जी उठेगा। भारतीय स्वतंत्रता के विगत साठ वर्षों में राजनीति ने जातिवाद का विष और अधिक फैलाया है। वोट की राजनीति और जाति के आधार पर आरक्षण आदि से हिंदू-समाज खण्ड-विखण्ड हो रहा है। इसी आपसी फूट ने भारत को हजारों वर्ष गुलाम बनाये रखा। आज भी हम राजनीतिक स्वतंत्रता के होते हुए भी मानसिक रूप से गुलामी की ओर बढ़ रहे हैं। अंग्रेजी और अंग्रेजियत का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है, जातिवाद की खाई और गहरी हो रही है, आर्थिक विषमता बढ़ रही है, सांस्कृतिक-क्षरण हो रहा है और भ्रष्टाचार शिष्टाचार का रूप ले रहा है। राष्ट्र अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। हमारी अपनी कमजोरियों से एक ओर तो अखिल इस्लामवाद की धारणा से आतंकवाद सिर उठा रहा है और दूसरी ओर विदेशी आर्थिक और सांस्कृतिक वर्चस्व बढ़ रहा है। क्या धर्माचार्यों का राष्ट्र के प्रति कोई कर्त्तव्य नहीं है? क्या वे राष्ट्र के नागरिक नहीं है? पूजा-पाठ, भक्ति और मुक्ति का नशा जनता को पिलाकर अपने लिए सुख-सुविधा के साधन जुटाना ही क्या उनका एकमात्र

शेष पृष्ठ 24 पर

आज का व्यंग्य

✍ आर.डी. अग्रवाल "प्रेमी"
साहित्यिक, तत्व-चिंतक, पत्रकार

कृष्ण ने भगवान होकर-
गाय का माखन चुराया,
मैंने नेता होकर
गाय का चारा चुराया,
तो कौनसा गुनाह किया है?
राम ने वनवास भोगा,
हम नेता सुरक्षा-बल की-
निगरानी में कारावास भोग रहे हैं,
तो राजा राम और हम बराबर ही हुए न!
राम ने सीता का परित्याग किया,
हम पत्नी को तलाक दे देते हैं-
राम का आदर्श हमने अपनाया है!
रावण ने सीता-हरण कर, शील की रक्षा की!
लोग शीलहरण कर हत्या कर देते हैं,
रावण से दस कदम आगे ही हैं!
राम वन में कंद-मूल खाते रहे,
और हम महलों में चिकन-गोस्त!
क्योंकि महलों में कंद-मूल कहाँ?
राष्ट्रपिता बापू ने एक धोती पहनी,
हम नेता सूट-बूट पहनते हैं,
जनता भूखी नंगी है-इससे हमें क्या?

-32/34, खेतवाड़ी, मुम्बई-400 004

पृष्ठ 23 का शेष (धर्माचार्यों का......)

उद्देश्य होना चाहिए? क्या उन्हें समाज, राष्ट्र और समष्टि के हित की दृष्टि से सामाजिक-एकता और जन-जागरण का कार्य नहीं करना चाहिए। मैं श्री मुरारीलाल अग्रवाल को बधाई देता हूँ कि उन्होंने "सतयुग की वापसी" पत्रिका से यह कदम उठाया है।

-"नमस्कार" बस स्टैण्ड के पीछे,
सतना-485 001 (म.प्र.)

महानता के दो आधार-
सादा जीवन, उच्च विचार।

जय मानवता केन्द्र, लाम्बाहरिसिंह

तह. मालपुरा (टोंक) राज.

नया कुछ भी नहीं मनन कर व्यवहार करें

आप यह करने में समर्थ हैं

पंच सिद्धांत अपनाकर,
अपने घर को स्वर्ग बनाओ।
सूर्योदय से पहले उठकर,
तन-मन को स्वस्थ बनाओ॥
उत्तर-पूरब शीश नवाकर,
वाणी से अमृत बरसाओ।
याद करो अपने प्रभु को,
पूरे दिन को सुखमय पाओ॥

1. अपने इष्ट देव की प्रार्थना करते समय बोलो-"सबका दुःख दूर हो, सबको सद्बुद्धि प्राप्त हो, सबका भला हो।"
2. भगवान के मंदिर में दर्शन करते समय ऐसी जगह खड़े रहो, जिससे दूसरे दर्शनार्थी को बाधा नहीं हो।
3. अपने घर पर एक अक्षय पात्र की स्थापना करके प्रतिदिन उसमें अपनी शक्ति के अनुसार अर्थदान करते रहें।
4. संचित राशि का उपयोग मानव-कल्याण के किसी भी कार्य में करें।
5. अपने इष्टदेव के नाम का मौन जप अवकाश के समय भी सतत् करते रहें।

-निवेदक : प्रभुदयाल काबरा
सेवानिवृत्त व्याख्याता
जय मानवता केंद्र, लाम्बाहरिसिंह

योग वशिष्ठ उपदेश

卐 पहले शिष्य को शम, दम आदि अच्छे गुणों द्वारा चित्त को शुद्ध करना चाहिए तब उसको "सब कुछ ब्रह्म है", इस प्रकार का उपदेश देना चाहिए।

卐 जो अज्ञानी को "सब कुछ ब्रह्म है", इस सिद्धांत का उपदेश देता है, वह उसे नरक की ओर प्रवृत्त करता है।

कालजयी 51 (इक्यावन) महाशक्तिपीठ

देवी भागवत, पद्म पुराण, स्कन्द पुराण तथा तंत्र चूड़ामणि आदि ग्रंथों में वर्णित कथा के अनुसार प्रजापति दक्ष द्वारा आयोजित विशाल यज्ञ में उन्होंने अपनी पुत्री सती और दामाद शिव को आमंत्रित नहीं किया था। कारण यही था कि वे भगवान शिव को श्मशान भिक्षुक मानते थे और उनके प्रति निरादर भाव रखते थे, क्योंकि ब्रह्माजी के कहने पर दक्ष ने रुद्रगण को पराजित कर दिया था, इसलिए भगवान सदाशिव को भी वे अपने अधीन समझते थे। कदापि उनकी यह इच्छा नहीं थी कि सती का विवाह शंकर से हो। भगवान ब्रह्मा के बहुत मनाने पर और समझाने पर ही उनको सती का विवाह शंकर से करना पड़ा था। शिव यज्ञ में नहीं गये, जबकि देवर्षि नारद के परामर्श से सती पितृ गृह चली गई। वहाँ यज्ञ में शिव के बैठने का स्थान तक भी न बना देख सती क्रोधित हो छाया सती का रूप बनाकर उन्होंने यज्ञ को बाधित कर पिता दक्ष को अभिशापित कर दिया और स्वयं योगाग्नि में समाहित हो गईं। देह को योगबल से त्यागते समय सती ने अगले जन्म में भी हिमवत्पुत्री पार्वती के रूप में शिवपत्नी होने का भी निश्चय किया था। उनके ऐसा करते ही पृथ्वी कांपने लगी, उल्कापात होने लगे, रक्त की भयंकर वर्षा होने लगी, यज्ञ-कुण्ड की अग्नि बुझ गई और सियार व कुत्ते हव्य का भक्षण करने लगे। नारदजी से यज्ञाग्नि में सतीजी के भस्मीभूत हो जाने का समाचार पाकर भगवान शिव ने महारौद्र रूप धारण करते हुए सती की पार्थिव देह को निज स्कन्धों पर उठा लिया और वे उन्मत हो इधर-उधर विचरने लगे।

पृथ्वी को धारण करने वाले शेषनाग और कच्छप उनके ताण्डव नृत्य वाले चरण प्रहार से व्याकुल हो गये और अकाल-प्रलय की स्थिति उत्पन्न हो गई। दु:खित देवों ने तब भगवान विष्णु से प्रार्थना की कि हे प्रभो! जगत् के कल्याणार्थ अब आप ही कुछ करें। तब विष्णुजी के सुदर्शन-चक्र से महाशक्ति के शरीर के अंग और आभूषण खण्डित होकर पृथ्वी पर जहाँ-जहाँ गिरे, वे सभी स्थान महाशक्तिपीठ बन गये।

देवी भागवत में महापीठों की संख्या 108, देवी गीता में 72, जबकि देवीपुराण में 51 बताई गई है। कुछ अन्य ग्रंथों में भी यद्यपि यह संख्या भिन्न-भिन्न दर्शाई गई है, तथापि देवी भक्तों और सुधीजनों में 51 शक्तिपीठों की ही विशेष मान्यता है। कुछ भू भाग, जो पहले बृहत्तर भारत के अंग थे, कालक्रम से स्वतंत्र देश के रूप में अब विद्यमान हैं, वहाँ स्थित शक्तिपीठों का विस्तृत विवरण अब अप्राप्य-सा है।

इनके अतिरिक्त 12 पीठ ऐसे हैं, जिन्हें देवी का दिव्य-क्षेत्र कहा गया है, अर्थात् वे जगज्जननी भगवती महाशक्ति काँचीपुर में कामाक्षी के रूप में, मलय गिरि में भ्रामरी रूप में, केरल में कुमारी (कन्याकुमारी), आनर्त (गुजरात) में अम्बा, करवीर (कोल्हापुर) में महालक्ष्मी, विन्ध्य क्षेत्र में विन्ध्यवासिनी रूप में, मालवा (उज्जैन) में कालिका, प्रयाग में ललिता, वाराणसी में विशालाक्षी रूप में, गया में मंगलावती, बंगाल में सुन्दरी और नेपाल में गुह्यकेश्वरी रूप में प्रतिष्ठित हैं। इस प्रकार मंगलमयी पार्वती इन 12 रूपों में यहाँ विद्यमान या स्थित हैं।

भूतभावन भवानीपति भगवान शंकर जैसे प्राणियों के कल्याणार्थ विभिन्न तीर्थों में पाषाण लिंग रूप में आविर्भूत हैं, वैसे ही करुणामयी भगवती भी लीलापूर्वक विभिन्न तीर्थों में विराजमान हैं।

ये शक्तिपीठ साधकों को सिद्धी और कल्याण प्रदान करने वाले हैं। इस प्रकार जगदम्बा भवानी के विभिन्न रूपों की उपासना की जाती है और जनमानस की इन सभी शक्तिपीठों में अटूट श्रद्धा और निष्ठा है।

महाशक्तिपीठ सम्बंन्धी तालिका

क्र. सं.	स्थान और शक्तिपीठों की संख्या	शक्तिपीठों का नाम (अंग/ आभूषण जो जहाँ-जहाँ गिरे)	अंग या आभूषण जो गिरे थे	शक्ति या देवी जो जिस नाम से वहाँ पूजी जाती हैं	भैरव
1	2	3	4	5	6
1	बंगाल के शक्तिपीठ–14	कालीपीठ	दायें पैर की चारों अंगुलियाँ	कालिका	नकुलीश
2.		युगाद्या	दायें पैर का अँगूठा	भूतधात्री	क्षीरकष्टक
3		त्रिस्त्रोता	वाम चरण	भ्रामरी	ईश्वर
4		बहुला	वाम बाहू	बहुला	भीरूक
5		वाकेश्वर या वक्रेश्वर	मन	महिष मर्दिनी	वक्त्रनाथ
6		नल हटी	उदरनली	कालिका	योगीश
7		नन्दीपुर	कंठहार	नन्दिनी	नन्दिकेश्वर
8		अठ्ठास	नीचे का होठ	फुल्लरा	विश्वेश
9		किरीट	शीरोंभूषण किरीठ	विमला	संवर्त
10		यशोर	वाम हथेली	यशोरेश्वरी	चन्द्र
11		चट्टल	दायी बाजू	भवानी	चन्द्रशेखर
12		करतोया तट	बांया तल्प	अर्पणा	वामन
13		विभाष	बांया टखना	कपालिनी	सर्वानन्द
14		सुगन्धा	नासिका	सुनन्दा	नयम्बक
15	मध्यप्रदेश के शक्तिपीठ–4	भैरव पर्वत	अर्ध्व ओष्ठ	अवन्ती	लम्बकर्ण
16		रामगिरी	दाहिना स्तन	शिवानी	चण्ड
17		उज्जयिनी	कुहनी	मंगलचन्डिका	माँगलयकपिलाम्बर
18		शोण	नितम्ब (दाँया)	नर्मदा	भद्रसेन
19	तमिलनाडु के शक्तिपीठ–4	शुचि	अर्ध्वदन्त	नारायणी	संकूर
20		रत्नावली	पृष्टभाग	कुमारी	शिव
21		कन्यकाश्रम	पीठ	शर्वाणी	निमिष
22		कॉंची	अस्थिपंजर	देवगर्भा	रूरू

1	2	3	4	5	6
23 24 25	बिहार के शक्तिपीठ–3	मिथिला वैद्यनाथ मगध	वाम स्कन्ध हृदय नेत्र एवं जाँघ	उमा जयदुर्गा सर्वानन्दकरी	महोदर वैद्यनाथ व्योम केश
26 27 28	उत्तरप्रदेश के शक्तिपीठ–3	वृन्दावन वाराणसी प्रयाग	केशपाश दाहिनी कर्ण–मणि हाथों की अंगुलियाँ	उमा विशालाक्षी ललिता	भूतेश काल भैरव भव
29	राजस्थान के शक्तिपीठ–2	मणिवेदिक (पुष्कर में)	मणिबंध (कलाइयाँ)	गायत्री	शर्वानन्द
30		विराटनगर (जयपुर से 65 किलोमीटर)	दायें पैर की अंगुलियाँ	अम्बिका	अमृत
31	गुजरात का शक्तिपीठ–1	प्रभास	उदर भाग	चन्द्रभागा	वक्रतुण्ड
32	आंध्रप्रदेश के शक्तिपीठ–2	गोदावरीतट (कुब्बुर में कोटि–तार्थ के पास)	बायाँ गाल	रुक्मिणी	दण्डपाणि
33		श्री शैल	ग्रीवा	महालक्ष्मी	संवरानन्द
34	महाराष्ट्र के शक्तिपीठ–2	करवीर (कोल्हापुर)	तीनों नेत्र	महिषमर्दिनी	क्रोधीश
35		जनस्थान नासिक (पंचवटी में)	ठुड्डी	भ्रामरी	विकृताक्ष
36	कश्मीर के शक्तिपीठ–2	श्री पर्वत या जैनपुर (लद्दाख और सिलहट के बीच)	तल्प	श्रीसुन्दरी	सुरानन्द
37		कश्मीर की अरमनाथ गुफा में पार्वती पीठ	अंग और कंठ भूषण	महामाया	त्रिसन्धेश्वर
38	पंजाब का शक्तिपीठ–एक	जालन्धर विश्वमुखी मंदिर	वाम स्तन	त्रिपुरमालिनी	भीषण

1	2	3	4	5	6
39	उड़ीसा का शक्तिपीठ–1	उत्कल (पुरी वाला विमला देवी मंदिर)	नाभि	विमला	जगन्नाथ
40	हिमाचल प्रदेश का शक्तिपीठ–1	ज्वालाजी (कांगड़ में)	जिह्वा	सिद्धिदा	उन्मत
41	असम का शक्तिपीठ–1	कामगिरि या कामरव्या (गुवाहाटी)	योनी	कामारव्या	उमानाथ
42	मेघालय का शक्तिपीठ–1	जयन्तीपीठ (शिलांग के वाऊर–भाग गांव में)	दाँयी जाँघ	जयन्ती	कमद्रीश्वर
43	त्रिपुरा का शक्तिपीठ	त्रिपुर सुंदरी (राधा किशोरपुर गांव के पास)	दाँया पैर	त्रिपुरसुन्दरी	त्रिपुरेश
44	हरियाणा के शक्तिपीठ–2	कुरूक्षेत्र (द्वैपायन सरोवर के पास)	टखना (दाँया)	सावित्री	स्थाणु
45		कालमाधव	वाम नितम्ब	काली	असितॉग
46	नेपाल के शक्तिपीठ–2	(नेपाल) गुह्यकालीदेवी (पशुपति मंदिर के पास वागमती नदी के किनारे)	दोनों घुटने	महामाया	कपाल
47		गंडकी नदी के उद्गगम स्थल पर (गंडकी)	दः गण्ड (कपोल)	गण्डकी	चक्रपाणि
48	पाकिस्तान का शक्तिपीठ–1	हिंगुला बलूचिस्तान प्रांत के हिंग–लाज में हिंगोस नदी के तट पर	ब्रह्मरन्ध्र	कोट्टारी	भीमलोचन

1	2	3	4	5	6
49	श्रीलंका का शक्तिपीठ-1	लंका	नुपूर	इन्द्राक्षी	राक्षसेश्वर
50	तिब्बत के शक्तिपीठ-2	मानसरोवर	हथेली (दाँयी)	दाक्षायणी	अमर
51		पंच सागर	अधोदन्त (नीचे के दाँत)	वाराही	महारूद्र

-संकलन : डॉ. एन.एस. शर्मा एवं कु. श्रद्धा, ब्लॉक नं. 45, फ्लेट नं. 495, सेक्टर-2, सी.जी.एस. कॉलोनी (अन्टाप हिल) मुम्बई-400 037

जीवन की क्यारी

✍ राम अवध यादव (वरिष्ठ अध्यापक)

मेरी जीवन की क्यारी में तेरी अमृत बरसी।
क्यारी बनी वाटिका सुंदर मूर्छित कलियाँ सरसीं॥
रोम-रोम पुलकित हो नाचा, भरी प्रेम की कलशी।
आँखें छलक-छलक स्नेहिल होकर निर्झर सी हर्षी॥
होठों पर महकी मुस्कान, छायी गालों पर लाली।
बिजली-सी चमकी दंतावलि, रसना ने रस पाली॥
जो जग अब तक निरानंद था, अब हो गया सुहाना।
अपना सा यह जग लगता है जो था अभी बेगाना॥
सब कुछ नया-नया लगता है, जो नित लगा पुराना।
हे प्रभु! ऐसे ही रहने दे, जग का कोना-कोना॥
खुद के गुण से मानव को तू, कभी न वंचित करना।
मानव मन सत्कर्मों से ऐसे ही सिंचित करना॥

-राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बोलेंग जनपद-ईष्ट सियांग, अरुणाचल प्रदेश-791 102

वैश्य महासम्मेलन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री रामनिवास लखोटिया के सुपौत्र का अनुकरणीय विवाह सम्पन्न

सुप्रसिद्ध आयकर विशेषज्ञ, जी बिजनेस टीवी चैनल के "टैक्स डॉक्टर" एवं अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री रामनिवास लखोटिया के सुपौत्र चि. सत्यप्रिय लखोटिया (सुपुत्र श्री सुभाष लखोटिया) का शुभ विवाह नई दिल्ली में 12 दिसम्बर, 2006 को सौ.कां. आरती के साथ सम्पन्न हुआ। सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं समाज के कर्णधारों ने इस विवाह की कई बातों को समस्त हिंदू-समाज और विशेषकर वैश्य-समाज के लिए

शेष पृष्ठ 34 पर

महात्यागी सेवा ट्रस्ट

(रजि. क्रमांक 27 दि. 8.7.2003)

अग्रवाल मौहल्ला, बाड़मेर (राज.) 344 001

<u>निवेदन :-</u> श्री श्री 108 जगत्गुरू रामानन्दाचार्य श्री रामाधाराचार्यजी हरिद्वार के संरक्षकत्व में कार्यरत् महात्यागी सेवा ट्रस्ट, अग्रवाल मौहल्ला, बाड़मेर-344 001 के सदस्य बनें एवं ट्रस्ट के तहत प्रकाशित "राम राम सा" त्रमासिक पत्रिकां के सभी अंकों को एकत्रित रखें। इसमें प्रस्तुत लेखों एवं प्रभु के गुणगान का अधिक से अधिक उपयोग एवं जीवन में उतारने का प्रयत्न करें। ट्रस्ट का उद्देश्य घर-घर में हनुमान चालीसा, सुन्दरकाण्ड की पुस्तकों का वितरण करना, राम नाम का प्रचार-प्रसार करना, घर-घर में तुलसी का पौधा लगाना, गौ-सेवा एवं अन्य कार्यों एवं गुरूजी द्वारा प्रतिपादित विभिन्न कार्यक्रमों में अपना अधिक से अधिक सहयोग प्रदान करना है।
"प्रथम चारिपद धर्म के कलि महूँ एक प्रधान येन केन विधि दिन्हें दान करहिं कल्याण।"

मतदाताओं के आर्थिक अधिकार के लिए संघर्ष हेतु सांसदों ने कमर कसी

वोटरशिप के लिए सांसद परिषद् का गठन

वैश्विकरण के कारण देश में पैदा हो रही समृद्धि मतदातावृत्ति (वोटरशिप) के माध्यम से घर-घर तक पहुँचे, इसके लिए कुछ संसद सदस्यों ने संघर्ष में उतरने का फैसला किया है। यह फैसला मतदातावृत्ति (वोटरशिप) पर आयोजित एक दिवसीय, 11 गोष्ठियों के बाद लिया गया। ये गोष्ठियाँ विभिन्न सांसदों के घरों पर आर्थिक आजादी परिसंघ की संसदीय प्रकोष्ठ की ओर से आयोजित की गई। गोष्ठियों का यह सिलसिला संसद के पूरे शीतकालीन सत्र-23 नवम्बर से 18 दिसम्बर 2006 तक चला। गोष्ठियों में भाग लेने वाले सांसदों के लिए रात्रिभोज का प्रबंध उन्हीं सांसदों ने किया, जिन सांसदों के निवास पर ये गोष्ठियाँ आयोजित की गईं।

मतदातावृत्ति (वोटरशिप) के विषय को ठीक से समझने के लिए आयोजित गोष्ठियों की इस श्रृंखला में कुल 38 सांसदों ने भाग लिया। गम्भीर मंथन के बाद गोष्ठियों के अंतिम दिनों में भाग लेने वाले सदस्यों ने तय किया कि मतदातावृत्ति (वोटरशिप) की बात को जिस तरह भरत गांधी के नेतृत्व में आर्थिक आजादी परिसंघ के कार्यकर्ताओं ने सांसदों तक पहुँचाया, उसी तरह अब संसद-सदस्य भी इस बात को केंद्रीय मंत्रिमण्डल के सदस्यों व पार्टी अध्यक्षों तक पहुँचाएंगे। सभी से निवेदन करेंगे कि मतदातावृत्ति (वोटरशिप) के मुद्दे पर सरकार संसद में विधेयक रखे और उसे सर्वसम्मति से पारित किया जाए। निष्पक्ष स्थिति को देखते हुए इस समिति का संयोजक सिक्किम के सांसद श्री नकुल दास राय को बनाया गया और यह भी तय किया गया कि उनका निवास 197, नॉर्थ एवेन्यू संसद सदस्यों की इस समिति का मतदातावृत्ति के लिए संसद सदस्यों की परिषद् (एमपीज़ कॉन्सिल फॉर वोटरशिप) रखा गया है। यह तय किया गया है कि वे सभी *110* संसद सदस्य इस समिति के मूल सदस्य माने जायेंगे, जिन्होंने भरत गांधी व अन्य लोगों की मतदातावृत्ति (वोटरशिप) सम्बन्धी याचिका को लोकसभा में पेश करने के लिए इसे प्रतिहस्ताक्षरित किया है। यह समिति बजट सत्र *2007* के प्रथम सप्ताह से अपना कार्य विधिवत शुरू कर देगी।

परिसंघ ने मतदातावृत्ति के लिए संघर्ष करने हेतु दोहरा मोर्चा खोलने की नीति अपनाई है। ''वोटरशिप के लिए संसद सदस्यों की परिषद्'' वोटरशिप के मुद्दे पर संसद के अंदर संघर्ष करेगी और दूसरी समिति जन-जागरण का काम करेगी। इस समिति को ''आर्थिक आजादी के लिए जनप्रतिनिधियों का मंच'' के नाम से जाना जाएगा। परिषद् के सदस्य केवल सांसद ही हो सकेंगे, जबकि मंच के सदस्य सांसदों के अलावा देश भर के विधायक, जिला पंचायत के सदस्य, ब्लॉक प्रमुख, ग्राम प्रधान आदि भी हो सकेंगे। संसद सदस्यों की परिषद् एक स्वायत्त निकाय होगी, जबकि जन-प्रतिनिधियों का मंच परिषद् के संसदीय प्रकोष्ठ के अधीन काम करने वाली एक समिति होगी। दोनों ही निकायों का स्वरूप यथा सम्भव सर्वदलीय रखा जाएगा। दोनों ही निकाय पूरी तरह अहिंसक साधनों से संघर्ष करते हुए मतदातावृत्ति (वोटरशिप) के विरोधियों को समझाएंगे व जन्मना आर्थिक अधिकार को संसद की मान्यता दिलाने के लिए काम करेंगी।

उल्लेखनीय है कि *110* सांसदों ने लोकसभा में पेश करने के लिए भरत गाँधी व अन्य लोगों की एक याचिका को प्रतिहस्ताक्षरित किया था व गत मानसून सत्र में कई सांसदों ने लोकसभा अध्यक्ष को नियम *168* के अंतर्गत उक्त याचिका पेश करने के लिए नोटिस दिया था। नोटिस देने का यह सिलसिला शीतकालीन सत्र *2006* तक जारी रहा। शीतकालीन सत्र में नोटिस देने वालों में भाजपा के श्री संतोष गंगवार, आर.पी.आई. के श्री रामदास अठावले, सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंट के श्री नकुल दास राय, मिजो नेशनल फ्रंट के श्री वन्लाल ज्वामा प्रमुख हैं। सपा के श्री मोहन सिंह व श्री रविप्रकाश वर्मा, बसपा के श्री मित्रसेन यादव व श्री लाल मणि प्रसाद, काँग्रेस के डॉ. करण सिंह यादव, बीजू जनता दल के प्रो. प्रसन्ना पटसानी, असम गण परिषद् के डॉ. अरूण

कुमार शर्मा, डी.एम.के. के प्रो. कॉदिर मोहिद्दीन, तेलगुदेशम पार्टी के डॉ. एम. जगन्नाथ ने संसद के गत मानसून सत्र में ही याचिका पेश करने के लिए नोटिस दे दिया था।

भारत के इतिहास की यह पहली ऐसी याचिका है, जिसे एक साथ 110 सांसदों ने सदन में पेश करने की लिखित इच्छा लोकसभा अध्यक्ष के समक्ष जाहिर की है। अब तक इस नियम के तहत याचिकाएँ एक या दो सांसद ही सदन में पेश करते रहे हैं। वोटरशिप सम्बन्धी इस याचिका को सांसदों के नोटिस मिलने के बाद लोकसभा सचिवालय ने वित्त मंत्रालय को नोटिस भेजकर जवाब मांगा है। आशा की जा रही है कि यह जवाब वित्त मंत्रालय संसद का बजट सत्र शुरू होने से पूर्व ही दे देगा। यदि सरकार इस याचिका के प्रति सकारात्मक रुख अपनाती है और वोटरशिप सम्बन्धी विधेयक सदन पारित कर देती है तो वैश्विकरण के कारण व मशीनों के परिश्रम के कारण देश में पैदा हो रही समृद्धि मुठ्ठी भर लोगों के हाथों में ही जमा नहीं होती रहेगी, अपितु प्रत्येक मतदाता के बैंक खाते में हर महीने पहुँचने लगेगी।

मतदातावृत्ति (वोटरशिप) सम्बन्धी याचिका में प्रत्येक मतदाता को हर महीने 1750 रुपया व महंगाई भत्ता अलग से देने का प्रस्ताव है। याचिका में यह भी प्रस्ताव है कि चुनाव आयोग व रिजर्व बैंक मिलकर देश के सभी लगभग 67 करोड़ मतदाताओं का बैंक में खाता खोलें व सभी को मतदाता पहचान-पत्र की जगह बहुउद्देशीय ए.टी.एम. कैश कार्ड जारी करें, जिससे वोटरशिप की रकम को पूर्ण पारदर्शिता के साथ एक-एक मतदाता के हाथों में पहुँचाना सम्भव हो सके।

याचिका में मतदातावृत्ति के कुल 18 लाभ गिनाये गये हैं, जिनमें गरीबी का निःसंदेह उन्मूलन, मतदान प्रतिशत में आश्चर्यजनक वृद्धि, देश के आर्थिक फैसलों में मतदाताओं की प्रत्यक्ष भागीदारी, आर्थिक तंगी से पैदा होने वाले अपराधों पर अंकुश, जीने के अधिकार की मान्यता, बालश्रमिकों व वैश्याओं के पुनर्वास, गरीब परिवारों में जन्मी प्रतिभाओं की रक्षा और जन्म के आधार पर आर्थिक ऊँच-नीच बनाने की दुर्व्यवस्था पर अंकुश आदि प्रमुख हैं।

–आशा राम गौतम, सचिव-याचिका समिति, संसदीय प्रकोष्ठ,
आर्थिक आजादी परिसंघ, 41, विक्टोरिया पार्क, स्पोर्ट्स कॉलोनी, मेरठ-250 005

भारतीय सर्वोदय पार्टी की रामलीला मैदान में विशाल रैली : उठाई मतदातावृत्ति (वोटरशिप) की मांग

सभी जातियों के अमीर नेताओं द्वारा क्रीमी लेयर का समर्थन कर दिये जाने के बाद हांसिये पर चले गये सभी जातियों के गरीबों को गोलबंद करने के लिए भारतीय सर्वोदय पार्टी ने आज रामलीला मैदान में एक विशाल रैली का आयोजन किया। रैली में यद्यपि सभी जाति के लोगों ने भाग लिया, किंतु अति पिछड़े समाज के लोग अपेक्षाकृत अधिक संख्या में मौजूद थे।

पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजाराम पाल ने रैली को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत की आजादी के लगभग 60 साल बीत जाने के बाद भी भारत के अधिकांश नागरिक अभी भी अपनी आजादी का इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह देश, सबका देश नहीं हो सका। यह देश केवल चंद अमीरों का देश बनकर रह गया है। उन्हीं की अमीरी को देश की अमीरी कहा जाता है, उन्हीं के विकास को देश का विकास कहा जाता है। क्रीमीलेयर का प्रावधान खारिज कर दिये जाने के कारण सामाजिक न्याय और आरक्षण का फायदा कुछ जातियों के चंद अमीर लोगों की बपौती बन गया है और लगभग सभी जातियों के गरीबों को आरक्षण न पाने के लिए आरक्षित कर दिया गया है।

उन्होंने राजनीति में पूँजी के दख़ल पर टिप्पणी करते हुए कहा कि पूँजीपति लोग नहीं चाहते कि संसद में गरीबी में पले-बढ़े लोग भी पहुँच जायँ। इसके लिए पूँजीपति लोग मीडिया का दुरुपयोग कर रहे हैं और पूँजी की प्रेरणा से संचालित मीडिया लोकतंत्र के चौथे खम्भे की बजाय पहला खम्भा बनता जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह खामियाजा अंततः पत्रकार बिरादरी को ही भुगतना होगा, क्योंकि कोई पत्रकार पूँजीपति के घराने से नहीं आता।

भारतीय सर्वोदय पार्टी की नीतियों से परिचित कराते हुए रैली में आए हुए लोगों से श्री राजाराम पाल ने कहा कि पार्टी अहिल्या बाई होल्कर, संत विनोबा भावे, रामास्वामी नायकर व माननीय बाबा साहेब अम्बेडकर के रास्ते पर चलते हुए आर्थिक गुलामी में जी रहे देश के करोड़ों लोगों के आर्थिक उद्धार के लिए काम करेगी। उन्होंने कहा कि पार्टी देश में मतदाताओं को "जन्मना आर्थिक अधिकार" दिलाने के लिए पूरे देश में वोटरशिप का अभियान चलायेगी और सभी पार्टियों को मजबूर करेगी कि वोटरों को हर महीने कुछ नगद रकम दिलाने का संसद में कानून बनाया जाये। उन्होंने कहा कि मैंने सांसद रहते हुए मतदाताओं के वोटरशिप के अधिकार का सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि इस सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता कि यही बात देश के बड़े पूँजीपतियों को नागवार गुजरी हो और उन्होंने मेरे खिलाफ साजिश रचकर मुझे संसद से बाहर निकलवाया हो।

पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने लोगों से सवाल पूछते हुए कहा कि यदि जन प्रतिनिधियों को सम्मान से जीने के लिए और सम्मान सहित मरने के लिए वेतन भत्ते और पेंशन का क़ानून बन सकता है तो उनको जनप्रतिनिधि बनाने वाले मतदाताओं के लिए पेंशन का कानून क्यों नहीं बनना चाहिए ? उन्होंने लोगों से पूछा कि यह सवाल उठाने के लिए उन्हें पुरस्कार मिलना चाहिए था या कालेपानी का दण्ड ? उन्होंने कहा कि अब, जब तक संसद वोटरशिप का कानून नहीं बनाती, तब तक के लिए हमारा जीवन इस काम को समर्पित रहेगा। अब हमें शाँति तभी मिलेगी, जब देश का हर दलित और हर पिछड़ा व्यक्ति हर महीने बैंक जाये और सरकार द्वारा जारी ए.टी.एम. कार्ड से वोटरशिप की रकम निकालकर घर ले आए और उस रकम से अपना इतना विकास करे कि देश में उसे उत्पादक और सम्मानजनक नागरिक की हैसियत प्राप्त हो जाए।

राजा राम पाल ने कहा कि देश के मतदाताओं की देश की समृद्धि में भागीदारी न होने के कारण ही नक्सलवाद बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि हमारी पार्टी पूरी तरह अहिंसक तरीके से देश के दबे-कुचले लोगों को जागरूक करेगी और उत्तरप्रदेश के आने वाले विधानसभा चुनावों में अधिकांश जगहों पर या तो अपने उम्मीदवार खड़ा करेगी या समान विचारधारा के दलों से मिलकर अपने गठबंधन का उम्मीदवार खड़ा करेगी। उन्होंने बहुजन समाज पार्टी की अध्यक्षा मायावती को मनुवादी मायावती बताया और उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव को अति पिछड़ों का दुश्मन बताया। उन्होंने मुलायम सिंह यादव पर टिप्पणी करते हुए कहा कि वे काँग्रेस की राह पर चलकर प्रदेश में किसी जाति विशेष व गुण्डाराज को बढ़ावा दे रहे हैं। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी को सामंतवादी पार्टी बताते हुए कहा कि इस सामंतवाद से देश को बड़ी मुश्किल से निजात मिली है, अब फिर उसी दलदल में गिरने की मूर्खता कोई नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि काँग्रेस की जर्जर हालत को देखते हुए व बहुजन समाज पार्टी के पथभ्रष्ट हो जाने के बाद अब उत्तरप्रदेश में भारतीय सर्वोदय पार्टी ही आशा की किरण के रूप में पैदा हुई है। उन्होंने लोगों से अपील की कि लोग गांव-गांव, घर-घर जाकर भारतीय सर्वोदय पार्टी का प्रचार करें, जिससे प्रदेश के घर-घर में समृद्धि पहुँच सके और प्रदेश चौतरफा बढ़ रही किसानों व मजदूरों की आत्महत्या से उबर सकें।

श्री पाल ने कहा कि भारतीय सर्वोदय जाति विहीन, वर्ण विहीन तथा समता-न्याय व बंधुत्व आधारित समाज की स्थापना पर बल देगी। प्रत्येक वयस्क भारतीय को मतदातावृत्ति (वोटरशिप) दिलाना ही पार्टी का अंतिम उद्देश्य होगा। इसके लिए भारतीय सर्वोदय पार्टी मण्डल, जिला व विधान सभा स्तर पर आगामी दिनों में धरना प्रदर्शन करके लोगों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने का काम करेगी। पार्टी लोगों को देश की आर्थिक सत्ता में भागीदारी दिलाने के लिए इसलिए संकल्पबद्ध है, जिससे सभी लोगों को यह देश अपना लगे और लोगों में राष्ट्रीयता की भावना मजबूत हो।

-प्रेस प्रवक्ता भारतीय सर्वोदय पार्टी, 199, नॉर्थ ऐवेन्यू, नई देहली-01

गीता-गीतिका

है अनन्त विज्ञान-सागरों का निचोड़ ही गीता में।
सृष्टिमात्र का भाग्य जागकर समा गया गीता में॥
कर्मज्ञान फिर भक्तिमार्ग उपदेश आ गया गीता में।
निखिल विश्व की शुचिता का संदेश आ गया गीता में॥
अर्जुन की सारी प्रश्नावली अपनी जानो गीता में।
एक-एक श्रीकृष्ण वाक्य को मंत्र समझ लो गीता में॥
सारे अवतारों की गाथाओं का वैभव गीता में।
निज जीवन की परम सफलता को पहचानो गीता में॥
अल्पधर्म को धार महाभय परित्राण है गीता में।
जड़-चेतन के रूप-रूप में ईश्वर-दर्शन गीता में॥
दिव्य विभूति अनन्त विश्व में व्याप्त बताई गीता में।
संदेहों को तो जड़े से ही दूर कर दिया गीता में॥
जीवन के संग्राम जीत लो, एक-एक कर गीता में।
देव-असुर का भेद लिखा, देवत्व जगाया गीता में॥
त्रिगुणात्मक संसार-सार भी प्रकट हो गया गीता में।
लोष्ट-अश्व-कंचन की समता को भी समझो गीता में॥

-कल्याण वर्ष-80, अंक-11

नशा-मुक्ति

आज देख लो दुनिया वालों, हालत बड़ी खराब है।
जान न पाये कारण इसका, जन मन तन बेताब है॥
किया विचार गहराई से, नस-नस में वही शराब है।
पान मसाला, गांजा, गुटखा, सब अपराधों का राज है॥
मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर, वहाँ भी दुराचार है।
पण्डित, पुजारी, नेता, मौलवी, सेवा में भी अनाचार है॥
शिक्षा और चिकित्साघर, वहाँ भी बंटाढ़ार है।
बुरा न मानो सभी नहीं, दुनिया में हा-हाकार है॥
क्षमा प्रार्थना यह मेरी, लिखते कहते मन लाचार है।
सुना, पढ़ा, देखा जैसा, भाव बना, रक्षक तो करतार है॥

-जय मानवता केंद्र, लाम्बाहरिसिंह, टोंक (राज.)

आशीर्वाद

प्रिय मुरारी,

आशीष।

नवसृजन, नवचिन्तन, नवचेतना, नव हर्ष।
तुम्हें सुख-शाँति, स्वास्थ्य समृद्धि, दे नव वर्ष।

-डॉ० रमाशंकर पाण्डेय, ई/763, सोनारी, जमशेदपुर

पृष्ठ 29 का शेष

(वैश्य महासम्मेलन ....)

बहुत ही अनुकरणीय कहा है। जैसे विवाह का निमंत्रण-पत्र हिंदी में था एवं एक पृष्ठ में साधारण-सा था, जबकि आजकल यह देखने में आ रहा है कि विवाह आदि मांगलिक प्रसंगों पर अंग्रेजी में तथा 100 या 150 रुपये तक का निमंत्रण-पत्र भेजने में लोग अपनी शान समझते हैं। दूसरी बात थी समय की पाबंदी। स्वागत समारोह एवं प्रीतिभोज का समय सायंकाल 7.30 बजे से 9.30 बजे रखा गया था और लगभग उसी समय में यह कार्य सम्पन्न भी हुआ। यहाँ तक कि रात्रि के 10.30 बजे विदाई का कार्यक्रम भी प्रारम्भ हो गया। एक अन्य बात जो इस विवाह में देखने को मिली, वह थी दहेज एवं प्रदर्शनी रहित सगाई की रस्म, जो 11 दिसम्बर, 2006 को सम्पन्न हुई। तत्पश्चात् सायंकाल 7.00 बजे से 9.00 बजे के बीच पारिवारिक सदस्यों के बीच ठीक समय पर गीत-नृत्य का समारोह सम्पन्न हुआ। अंतिम बात जो विशेष रूप से सराही गई, वह थी कि लखोटिया परिवार ने "सगुन" के रूप में लिफाफे और उपहार किसी से भी नहीं लिए गए। इसका स्पष्ट उल्लेख विवाह के निमंत्रण-पत्र में भी कर दिया गया था, जिसका पूर्ण रूप से पालन किया गया। शुद्ध, शाकाहारी भोजन और आज के फैशन का मद्यपान, जो आजकल फैशन पसंद लोग शादी के समारोह में करते हैं, उससे पूर्ण रूप से रहित यह समारोह अतिथियों द्वारा बहुत प्रशंसित रहा।

अपनों के पत्र

रामचाकर C/o
कुंवर दिव्यराज सिंह सिसौदिया
"एडवोकेट", बैरागढ़ (म.प्र.)

"सत्यधर्मधाम", बंगला नं० 5,
कैलाश नगर, (ए-सैक्टर), सी.टी.ओ.,
बैरागढ़ (भोपाल) म.प्र., पिन-462-030

दिनांक-23.9.06

आ०श्री मुरारीलाल अग्रवाल जी,

सप्रेम जय श्रीराम!

आपको मेरे द्वारा प्रेषित पूर्व पत्र व अन्य सामग्री मिली होगी, परंतु प्राप्ति-सूचनानहीं मिली, कृपया सूचित करें। जुलाई-अगस्त-06 की पत्रिकाओं "सतयुग की वापसी" में स्वामी परमानन्द सरस्वती, छत्तीसगढ़, की पुस्तकों के बारे में पढ़ा था, उनको M.O. भेजकर पुस्तकें मंगाई, पढ़ीं व उन्हें तदनुसार पत्र लिखा है। सौभाग्य से मैं भी आचार्य श्री राम शर्मा जी का अनुयायी रहा हूँ व उनके अंत समय व मृत्यु पश्चात् की गतिविधियों को देखते गायत्री परिवार से किनारा कर चुका हूँ। आपकी पीड़ा मैं समझ सकता हूँ। एक सच्चे, सत्य धर्मसाधक के नाते मेरा यह कर्त्तव्य है कि सत्य का ग्रहण, असत्य का त्याग व धर्म का आचरण एवं अधर्म का विसर्जन करता रहूँ। आपका इसमें बहुमूल्य सहयोग अपेक्षित है। स्वामी जी को लिखे पत्र का उत्तर इस प्रकार है-"यह कलियुग का ही प्रताप है कि अपूज्यों की पूजा हो रही है। तुलसीदास जी कलियुगी गुरूओं व धर्माचार्यों का परिचय दे ही चुके हैं, फिर आप नाहक क्यों परेशान हो रहे हैं। गुरू कितना ही झूंठा व मक्कार क्यों न हो, शिक्षा व संदेश सत्यधर्म का ही देगा, यह एक अलग विषय है कि लोग उसे किस प्रकार ग्रहण करते हैं। बाप कितना ही नसेड़ी क्यों न हो, अपने बच्चों को व्यसन-मुक्त ही देखना चाहेगा। अत: हमें ग्रहण वही करना चाहिए, जो सत्यधर्म पर खरा उतरता हो। इस दुनिया में निर्दोष तो केवल भगवान हैं। गुणदोषमय सृष्टि में गुण-ग्राहकता व दिव्य-दृष्टि ही हमें गुणवान व ब्रह्मदृष्टा बना सकती है। यदि हम परदोषों का ही चिंतन करते रहे, तो स्वयं भी दूषित ही बनकर रह जायेंगे। संत शिरोमणि तुलसीदास जी परनिंदा के समान कोई अन्य पाप नहीं बताते हैं। अत: हम किसी के पापों का गान कर अधर्म क्यों कमायें, सत्यार्थ प्रकाश होते हुए अंधकार में क्यों भटकें? प्रकाश ही अंधकार का सही उपचार हो सकता है, वही उपचार है। अत: उसे ही फैलाते रहें। आशा ही नहीं हमें पूर्ण विश्वास है कि एक बुद्धिमान व्यक्ति के लिए इतना ही पर्याप्त होगा।" कृपया आप मेरे इस पत्र के सार को यदि उचित समझें तो अपनी पत्रिका में अवश्य स्थान दें, जिससे अन्य समान विचारों वाले इससे अवगत हो सकें। शेष शुभ।

-आपका अपना ही *रामचाकर*

रजिस्ट्रेशन संख्या आर. एन. आई. 43491/85 जनवरी-2007 पोस्टल रजिस्ट्रेशन आर. जे. 613

भविष्य फल

दुनिया का कोई भी ज्योतिषी शत्-प्रतिशत् सही भविष्यवाणी नहीं कर सकता। पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाले भविष्य फल पाठकों को भ्रमित करते हैं और धोखा देते हैं। अत: हम इस पत्रिका में किसी का भविष्य फल प्रकाशित नहीं करते।

वशिष्ठ जैसे पंडित-ज्ञानी ने जो मुहूर्त राम के राजतिलक का निकाला था, उस समय राम को वन में जाना पड़ा। अत: किसी भी पंडित को शुभ-अशुभ का मुहूर्त निकालकर किसी को धोखा नहीं देना चाहिए। धोखेबाजों को भगवान कभी क्षमा नहीं करेगा।

विज्ञापन

इस पत्रिका में नशीली वस्तुओं एवं ढोंग-पाखण्ड फैलाने वाले तांत्रिकों आदि के विज्ञापन किसी भी कीमत पर प्रकाशित नहीं किये जाते।

मानव के लिए उपयोगी वस्तुओं के विज्ञापन बहुत कम रेट पर प्रकाशित किये जाते हैं। विज्ञापन दाता पत्र व्यवहार करें :-

सतयुग की वापसी
अलवर-301 001

पत्रिका की सदस्यता

(1) पत्रिका का वार्षिक शुल्क एक सौ रुपये तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1100 रुपये है।
(2) चार वार्षिक सदस्य प्रति वर्ष या चार आजीवन सदस्य एक बार बनाने वालों को यह पत्रिका आजीवन नि:शुल्क भेजी जायेगी।

सदस्यता शुल्क

पत्रिका के जिन सदस्यों ने पत्रिका की वार्षिक सहयोग राशि वर्ष-2007 के लिए अभी तक नहीं भेजी है, उनसे विनम्र निवेदन है कि सदस्यता सहयोग राशि M.O. या D.D. से निम्नलिखित पते पर शीघ्र भेजें :-

"सतयुग की वापसी"
34, मधुवन, अलवर-301 001 (राज.)

ग्राहक संख्या
श्रीमती/श्री .... P.B. 1149 CHOWK VARANASI 221001

प्रेषक :- 'सतयुग की वापसी'
34, मधुवन, अलवर-301001

मूल्य 10 रुपये